सत्यमेव जयते

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ

उत्तर प्रदेश

उद्घोष

त्रैमासिक ई-पत्रिका

द्वितीय अंक

जुलाई-सितम्बर 2021

सम्पादकीय समिति

डॉ0 नृपेन्द्र सिंह
अध्यक्ष/संरक्षक
``उद्घोष'' त्रैमासिक ई–पत्रिका
सम्पर्क सूत्र : 9259049509

श्री नरेन्द्र विक्रम सिंह
सम्पादक
सम्पर्क सूत्र : 7398372302

श्री भागवत शुक्ल
सह–सम्पादक
सम्पर्क सूत्र : 9936595999

श्री उमेश चन्द्र जायसवाल
स्थायी सदस्य (संपादकीय समिति)
जनपद न्यायालय, बस्ती

श्री ऋषि यादव
सदस्य (संपादकीय समिति)
जनपद न्यायालय, फर्रूखाबाद

श्री विवेक कुमार
सदस्य (संपादकीय समिति)
जनपद न्यायालय, अमेठी

श्री वरूण बाजपेई
सदस्य (संपादकीय समिति)
जनपद न्यायालय, सहारनपुर

श्री पंकज तिवारी
सदस्य (संपादकीय समिति)
जनपद न्यायालय, महोबा

श्री सर्वेश गौतम
सदस्य (संपादकीय समिति)
जनपद न्यायालय, औरैया

श्री नीरज मणि त्रिपाठी
सदस्य (संपादकीय समिति)
जनपद न्यायालय, बस्ती

श्री राहुल शर्मा
सदस्य (संपादकीय समिति)
जनपद न्यायालय, हरदोई

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश

(राजाज्ञा सं0 1083/7-137, 17/27-1928 तथा संख्या 99/7139, दिनांक 22 जनवरी 1931 द्वारा मान्यता प्राप्त)

मुख्यालय

15-A अभिषेक पुरम, जानकी पुरम विस्तार,
लखनऊ (उ0प्र0)-226021

Website: http://dnksup.com/
E-mail contact@dnksup.com, dnksup1931@gmail.com

अध्यक्षीय कार्यालय

जिला एवं सत्र न्यायालय
बदायूं (उ0प्र0)

E-Mail : president@dnksup.com

महासचिव कार्यालय

जिला एवं सत्र न्यायालय,
श्रावस्ती (उ0प्र0)

E-Mail : generalsecretary@dnksup.com

मुकुट बिहारी वर्मा
मंत्री
सहकारिता विभाग

सं0 मेमो /वी.आई.पी./मंत्री/सह0
58-58ए मुख्य भवन,
सचिवालय, लखनऊ
फोन/फैक्स (का.) : 0522-2238066
(आ.) : 0522-2235687

दिनांक : 15-09-2021

:: संदेश ::

बड़े हर्ष का विषय है कि दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ0प्र0 न्यायिक कर्मचारीगण के हितार्थ प्रत्येक त्रैमास में, पत्रिका का प्रकाशन करता है, जिसमें कर्मचारीगणों के सुझाव, लेख, कविता आदि का प्रकाशन होता है। इसी प्रकार संघ कर्मचारीगणों के नौनिहालों के लिये ''बच्चों का कोना'' भी प्रकाशित करता है, जिसमें बच्चों के लेख, कविता, चित्र इत्यादि प्रकाशित किये जाते हैं। इसी कड़ी में संघ द्वारा एक पत्रिका ''उद्घोष'' का भी प्रकाशन किया जा रहा है। सबसे अच्छी बात है कि पत्रिकायें हिन्दी भाषा के उत्थान को समर्पित हैं। आशा करता हूँ कि पत्रिका आम जनमानस के लिये बहुत लोकप्रिय एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ0प्र0 से जुड़े कर्मचारीगणों, संघ के पदाधिकारीगणों, लेखकों, वक्ताओं को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभेच्छु,

(मुकुट बिहारी वर्मा)

तेज प्रताप तिवारी
एच0जे0एस0

विश्राम कक्ष
जनपद न्यायाधीश
गोरखपुर।

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश, द्वारा त्रैमासिक ई–पत्रिका 'उद्घोष' का दूसरा विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

पत्र–पत्रिकाएं न केवल जनता की नब्ज पर हाथ रखने का प्रयास करती है बल्कि उनकी समस्याओं को पुरजोर तरीके से उठाने का सशक्त मंच भी साबित होती है। मुझे न केवल आशा है बल्कि पूर्ण विश्वास है कि ई–पत्रिका 'उद्घोष' के माध्यम से संघ अपनी इस भूमिका को निभाने में पूरी ईमानदारी, मेहनत एंव सक्रियता के साथ काम करता रहेगा।

मैं विशेषांक से जुड़े समस्त बंधुओं को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(तेज प्रताप तिवारी)
जनपद न्यायाधीश

शुभकामना सन्देश

मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता है, कि दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ ,उत्तर प्रदेश की ओर से त्रैमासिक ई-पत्रिका ‘‘उद्घोष’’ के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ के लिए बड़े गौरव की बात है। इसके माध्यम से दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ के सभी साथियों को अपने विचार, सुझाव इत्यादि प्रकट करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। मुझे आशा है, कि इस पत्रिका में प्रकाशित विचार, सुझाव व लेख कर्मचारी साथियों के उत्थान व कल्याण में तथा संघ को कार्य करने की नई दिशा प्रदान करने में सहायता प्रदान करेंगे । मैं इस त्रैमासिक पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मंगल कामनाएं करता हूं।

(संदीप चौहान)
प्रांतीय संरक्षक,
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

सम्पादक की कलम से

उद्घोष के प्रथम संस्करण को आप सबने जो स्नेह प्रदान किया है, उससे इस पत्रिका को लाने की हमारी सोच को बहुत बल मिला है और हम इस प्रकार के आपके अतुल्य सहयोग से उत्साहित हैं। हम आपके समक्ष **उद्घोष** का दूसरा संस्करण प्रस्तुत करते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं और आशा करते हैं कि विद्वान पाठकों का स्नेह इस संस्करण को भी प्राप्त होगा।

आपसे मैं कहना चाहूंगा कि हमारी यह पत्रिका एक दिन हमारी पहचान बनेगी और यह संघ की अनिवार्य आवश्यकता भी होगी, पिछले संस्करण में माननीय मुख्य न्यायमूर्ति महोदय, माननीय विधि मंत्री महोदय, माननीय न्यायमूर्ति/अध्यक्ष अधिकारी कर्मचारी संघ माननीय उच्च न्यायालय और माननीय विद्वान न्यायिक अधिकारीगण के शुभकामना सन्देश हेतु संपादक मंडल आपका आभार व्यक्त करता है।

हमने **उद्घोष** के साथ साथ संघ की वेबसाइट भी प्रारम्भ की, जिसका उद्घाटन माननीय मुख्य न्यायमूर्ति महोदय के कर कमलों से माननीय विशिष्ट अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री एस०पी० केसरवानी महोदय तथा प्रदेश के समस्त विद्वान न्यायिक अधिकारीगण की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। यह क्षण हमारे लिए स्वर्णिम रहा। वेबसाइट पर आप सबके सेवा सम्बन्धी शासनादेश संकलित किए गए हैं, उनका लाभ अवश्य उठाइए साथ ही आप अपने बहुमूल्य सुझाव भी हम तक प्रेषित कीजिए हम आपके सुझावों से और बेहतर करने का प्रयास करेंगे।

उद्घोष के प्रथम संस्करण में जिन विद्वान साथियों ने अपनी कलम के मोती बिखेरे थे, उन सबका हार्दिक धन्यवाद। आपके ओजस्वी लेखन से ही **उद्घोष** का प्रथम संस्करण इतना पसंद किया गया। हमारे न्यायिक परिवार के बच्चों को भी ढेर सारा प्यार और आशीष, कि आपकी सुंदर लेख और चित्र हमारे **उद्घोष** में आपने प्रेषित किए।

यह द्वितीय संस्करण आप सबके सम्मुख प्रेषित है, कृपया स्वीकार करें।

आपका

(नरेन्द्र विक्रम सिंह)

सम्पादक

"उद्घोष" त्रैमासिक ई-पत्रिका

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश के स्वर्णाक्षर श्री राजाराम वर्मा जी के निधन पर

विनम्र श्रद्धांजलि

श्री राजाराम वर्मा सन 1965 में जिला न्यायालय लखनऊ में लिपिक के पद पर तदर्थ रूप से भर्ती हुए थे। 1967 में जब जनपद न्यायालय लखनऊ में लिपिक वर्गीय भर्ती परीक्षा आयोजित हुई तो अपने बैच में टॉप किया। मूल रूप से वह बाराबंकी जनपद के निवासी थे। इनके पिता माननीय उच्च न्यायालय खंडपीठ लखनऊ में न्यायमूर्ति श्री बी० एन० निगम आईसीएस के अर्दली थे। श्री वर्मा जी का जन्म सन 1942 में हुआ था। जनपद लखनऊ में 35 वर्ष की सेवा के उपरांत वर्ष 2000 में मुंसरिम/रीडर के पद से सेवानिवृत्त हुए। इनका निधन अल्पकालिक बीमारी के बाद दिनांक 17 अगस्त 2021 को एक स्थानीय नर्सिंग होम में हुआ। दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश से इनका जुड़ना सन् 1971 में संपन्न हुए मेरठ अधिवेशन में हुआ। इस अधिवेशन में मेरठ के सदर मुंसरिम श्री देवी प्रसाद सक्सेना व श्री कृष्ण स्वरूप फैजाबाद क्रमशः संघ के अध्यक्ष और महासचिव चुने गए।

बैंगलोर में न्यायालय कर्मचारी की राष्ट्रीय सभा को सम्बोधित करते हुए श्री राजाराम वर्मा जी

वर्ष 1971 से1976 तक संघ की गतिविधियां शिथिल रही। इसी मध्य देश में आपातकाल लगा जिससे हमारी न्यायपालिका भी अछूती नहीं रही। श्रीमती इंदिरा गांधी देश की प्रधानमंत्री थी, उन्होंने न्यायमूर्ति ए० एन० रे० को वरिष्ठता क्रम तोड़ते हुए भारत का प्रधान न्यायाधीश नियुक्त किया। परिणाम स्वरूप कई न्यायाधीशों ने विरोध स्वरूप अपना त्यागपत्र दिया। इसका प्रभाव प्रदेश के अधीनस्थ न्यायालयों पर भी पड़ा।

लखनऊ जनपद न्यायालय में जनपद न्यायाधीश के रूप में तैनाती श्री बी०एल० गोयल नामक न्यायाधीश की हुई। इनके अत्याचार से कर्मचारी,अधिकारी तथा अधिवक्ता गण सभी त्रस्त हुए। परिणाम स्वरूप मई 1976 में 23 दिन की अनिश्चितकालीन हड़ताल कर्मचारियों द्वारा की गई इसमें जनपद के अधिकारियों तथा अधिवक्ताओं का पूरा सहयोग रहा। अंत में 23 मई सन 1976 को यह आंदोलन वरिष्ठ अधिवक्ता गण जिनमें बाबू राम किशन श्रीवास्तव, श्री उमाकांत श्रीवास्तव तथा श्री राबिन मित्रा एडवोकेट प्रमुख थे, ने तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश श्री के० बी० आस्थाना से वार्ता की। तब जाकर आंदोलन समाप्त हुआ और जनपद न्यायाधीश श्री बी० एल० गोयल का स्थानांतरण सर्विस टिब्युनल में हुआ।

ऐसे संकट कालीन समय में बाबू राजा राम वर्मा ने कार्यवाहक प्रांतीय सचिव के रूप में **"एक निवेदन"** शीर्षक से एक पत्रक पूरे प्रदेश की न्यायिक कर्मचारियों के नाम सभी जनपद न्यायालयों में भेजा। फिर जनपद न्यायालय लखनऊ तथा प्रदेश की अन्य जिला इकाइयों के सामूहिक प्रयास से वर्ष 1976 में प्रांतीय अधिवेशन लखनऊ में आयोजित किया गया, इसमें प्रदेश के बहुत सारे कर्मचारी लगभग सभी जिलों से सम्मिलित हुए। तब से वे दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ से निरंतर जुड़े रहे और आल इंडिया जुडीशियल कर्मचारी महासंघ के गठन और शेट्टी कमीशन की पैरवी में सेवानिवृत्त होने तक श्री राजाराम वर्मा जी ने अपनी अग्रणी और सक्रिय भूमिका निभाई। उनका संघ में और कर्मचारी हितों से जुड़े रहना संघ के इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज रहेगा।

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश उनकी आत्मा की शांति और सद्गति हेतु अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

(डॉ0 विजय कुमार)
भूतपूर्व प्रांतीय अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

श्री पवन कुमार अग्रवाल, अमीन कमिश्नर, जनपद न्यायालय लखीमपुर खीरी दिनांक 07-12-2010 को सिविल कोर्ट परिवार में सम्मिलित हुए थे। आज से करीब 23 वर्ष पूर्व श्री पवन कुमार अग्रवाल ने बैडमिन्टन खेलना शुरू किया था। बचपन से खेल प्रेमी श्री पवन कुमार सेवा में आने के बावजूद अपनी खेल भावना को दबाया नहीं। सर्विस आने के बाद उन्होंने सिविल सर्विसेज प्रतियोगिता जो कि प्रत्येक वर्ष होता है, उसमें प्रतिभाग किया। पहली बार उन्होंने प्रतिभाग किया तो जिले स्तर पर ट्रायल में सफल रहे, मण्डल स्तर पर ट्रायल में भी सफल रहे, राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का अयोजन जनपद इलाहाबाद में हुआ। जहां श्री पवन जी को पहली बार में ही हार का सामना करना पड़ा। श्री पवन जी हिम्मत नहीं हारी। वो बैडमिन्टन की तैयारी करते रहे और दो वर्ष बाद

पुनः सिविल सर्विसेज बैडमिन्टन प्रतियोगिता में जिले में, क्रमशः मण्डल में खेले। इस बार राज्य स्तरीय प्रतियोगिता जनपद झांसी खेलने गये और इसी तरह पिछले पाँच वर्षों में श्री पवन जी दो बार दूसरे स्थान पर तथा तीन बार चैम्पियन रहे । श्री पवन जी चार बार (आइजोल, पूणे, रायपुर एवं अहमदाबाद) राष्ट्रीय स्तर पर खेल चुके हैं। इस वर्ष भी श्री पवन अग्रवाल जी 24 सितम्बर 30 सितम्बर तक आयोजित होने वाली राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में सम्मिलित होने के लिए दिल्ली खेलने जा रहे हैं।

श्री पवन कुमार अग्रवाल जी ने उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण अधीनस्थ न्यायालय कर्मियों का मान बढ़ाया है। **उद्घोष** पत्रिका परिवार, प्रांतीय संघ एवं पूरे प्रदेश के सम्मानित सदस्यों की तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आपके उज्ज्वल एवं स्वर्णिम भविष्य

की मंगलकामनाएं !

14 सितम्बर विश्व हिंदी दिवस पर जकार्ता (इन्डोनेशिया) में निवास कर रहे भारतीय मूल के कुछ हिंद प्रेमियों ने भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ देशों जैसे भारत, इंडोनेशिया, सिंगापुर, मलेशिया एवं श्रीलंका के भारतीयों को ऑनलाइन जोड़कर विभिन्न कैटेगरी में हिंदी दिवस पर एक कार्यक्रम कर आयोजन किया था। जिसमें उत्तर प्रदेश दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ के भूतपूर्व मार्गदर्शक श्री राजेन्द्र जौहरी जी ने हिंदी भाषा के महत्व के प्रति अपना सम्बोधन दिया एवं **"रह जाता कोई अर्थ नहीं"** कविता के माध्यम से देश विदेशों में काव्य पाठ में परचम फहराया।

श्री जौहरी जी ने हिंदी दिवस अन्तर्राष्ट्रीय काव्यपाठ सम्मेलन में सम्मिलित होकर संगठन और जनपद न्यायालय उत्तर प्रदेश के ही नहीं अपितु प्रदेश और देश का नाम रौशन किया ! सिविलकोर्ट लीडर व कर्मचारियों का बिना किसी भेद भाव स्वार्थ के हितैषी होने के नाते अपने एक अनुज शिष्य को विदेश में हिंदी से सम्बंधित कवि सम्मेलन में आमंत्रित किये जाने से गदगद और गौरन्वित हुआ। दीवानी न्यायालय कर्मचारियों के सेवानिवृत नेतृत्व की कला को जो सम्मान मिला है वो अविस्मरणीय है।

श्री राजेन्द्र जौहरी साहब एवं जनपद न्यायालय, उन्नाव को संपूर्ण उत्तर प्रदेश के कर्मचारियों की तरफ से एवं दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित उद्घोष त्रैमासिक पत्रिका के माध्यम से हार्दिक बधाई देता हूँ!

(पं0 अनिल शुक्ल)
भूतपूर्व संरक्षक
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश के संयुक्त सचिव **श्री प्रेम नारायण जी** के **24** वर्षीय सुपुत्र श्री उत्कर्ष नारायण जी ने पहले प्रयास में भारतीय प्रशासनिक सेवा **740**वी रैंक के साथ उत्तीर्ण की। श्री उत्कर्ष नारायण जी इंटरमीडिएट तक की शिक्षा सेक्रेडहार्ड इंटर कालेज सीतापुर से प्राप्त की उसके बाद ग्रेजुएशन केमिस्ट्री आनर्स हिंदू कालेज दिल्ली से किया तथा श्री उत्कर्ष जी ने वर्ष

2019 पीसीएस परीक्षा भी उत्तीर्ण की थी। वर्तमान समय में श्री उत्कर्ष दिल्ली में ही रहकर बिना किसी कोचिंग के सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहे थे। जिसके परिणाम स्वरूप उसका चयन सिविल सर्विसेज में हुआ।

उद्घोष ई-पत्रिका परिवार की तरफ से श्री उत्कर्ष नारायण जी को ढेरों बधाई एवं शुभकामनाएं। उत्कर्ष जी के उज्ज्वल एवं स्वर्णिम भविष्य की मंगलकामनाएं।

दिनांक **22-09-2021** को जनपद मुरादाबाद में उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री पूज्य आदित्य नाथ योगी जी द्वारा दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ० नृपेन्द्र सिंह जी की धर्मपत्नी पत्नी श्रीमती अर्चना सिंह (प्रधानाचार्य, प्राथमिक विद्यालय फरीदपुर हमीर, विकास खंड कुंदरकी, जनपद मुरादाबाद) जी को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

उद्घोष ई-पत्रिका परिवार की तरफ से शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ठ सम्मान प्राप्त करने श्रीमती अर्चना सिंह जी एवं प्रांतीय अध्यक्ष डॉ0 नृपेन्द्र सिंह जी को ढ़ेरों बधाई व शुभकामनाएं।

श्री आलोक कुमार सिंह (वरिष्ठ सहायक) जनपद न्यायालय, पीलीभीत के छोटे भ्राता श्री सूर्य प्रताप सिंह ने संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सर्विसेज परीक्षा में सफलता प्राप्त की। उन्होंने **258** वीं रैंक हासिल की है। बीसलपुर में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने वाले श्री सूर्य प्रताप सिंह ने बरेली कालेज के परास्नातक की पढ़ाई पूरी की। इन दिनों वह दिल्ली में रहकर परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। उनके पिता ने कानूनगो पद से अवकाश प्राप्त किया है। श्री सूर्य प्रताप सिंह ने कक्षा एक से पांच तक की पढ़ाई सरस्वती शिशु मंदिर बीसलपुर और कक्षा छह से दस तक की पढ़ाई पूरनपुर के इंग्लिश मीडियम स्कूल में की थी। इसके बाद 11 और 12 की शिक्षा बरेली इंटर कालेज से प्राप्त की। इसके बाद वह दिल्ली जाकर आई. ए. एस. की तैयारी करने लगे। उन्होंने पहले प्रयास में ही आई. ए. एस. की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। **श्री सूर्य प्रताप सिंह के बड़े भ्राता श्री आलोक कुमार सिंह मुंसिफ कोर्ट बीसलपुर में वरिष्ठ सहायक हैं।**

सूर्य प्रताप सिंह का चयन वायुसेना के लिए जुलाई 2017 में हुआ था। ट्रेनिंग के दौरान चोट लगने पर उन्होंने वायुसेना से त्याग पत्र देकर कुछ अलग करने की सोची। आखिर में उन्होंने आई. ए. एस. बनने की ठानी और सफलता भी हांसिल की।

उद्घोष त्रैमासिक ई-पत्रिका परिवार की ओर से श्री सूर्य प्रताप सिंह जी को ढ़ेरो बधाई एवं उज्ज्वल एवं स्वर्णिम भविष्य की मंगलकामनाएं।

अनमोल वचन

आप अगर तख्त-नशीं हैं तो बड़ी बात नहीं ,
धूल भी उड़ के बुलंदी पे पहुँच जाती है
करिए कुछ ऐसा अपने रहते हुए,
ताउम्र आपको लोग याद करें
जीवन लीला है, शिकायत कैसी
अपना किरदार शिद्दत से निभाइए
कहानी तो एक दिन सभी को बनना है।

(राजेन्द्र जौहरी)
भूतपूर्व प्रांतीय मार्गदर्शक
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

सत्य, त्याग, समर्पण, सेवा और शांति का संदेश लेकर भगवान बुद्ध आज भारत ही नहीं बल्कि विश्व के तमाम देशों में पूज्यनीय हैं । अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। संसार में वही सुखी है, जिसने अहंकार, ईर्ष्या, बैर, कटुता, तृष्णा व स्वार्थ को जीत लिया है एवं दया, सत्य, अहिंसा व भाईचारा को जीवन में उतार लिया है। भगवान बुद्ध का संदेश आज भी प्रासंगिक है। जीवन में हजारों लड़ाइयां जीतने से बेहतर स्वयं पर विजय प्राप्त करना है। अगर यह कर लिया तो फिर जीत हमेशा ही तुम्हारी होगी, इसे तुमसे कोई नहीं छीन सकता।

किसी भी हालत में इन तीन चीजों को कभी नहीं छुपाया जा सकता है और वो हैं सूर्य, चन्द्रमा और सत्य। जीवन में किसी उद्देश्य या लक्ष्य तक पहुंचने से अधिक महत्वपूर्ण उस यात्रा को अच्छे से संपन्न करना होता है। बुराई को बुराई से खत्म नहीं किया जा सकता, घृणा को केवल प्रेम द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है, यह एक अटूट सत्य है। सत्य के मार्ग पर चलते हुए मनुष्य केवल दो ही गलतियां कर सकता हैं। पहली या तो पूरा रास्ता न तय करना, दूसरी या फिर शुरुआत ही न करना। भविष्य के बारे में मत सोचो और अतीत में मत उलझो, सिर्फ वर्तमान पर ध्यान दो, जीवन में खुश रहने का यही एक सही मार्ग है। खुशियां हमेशा बांटने से बढ़ती हैं, जैसे कि एक जलते हुए दीपक से हजारों दीपक रोशन किए जा सकते हैं फिर भी उस दीपक की रोशनी कम नहीं होती। आप चाहें जितनी भी अच्छी किताबें पढ़ लें, कितने भी अच्छे शब्द सुन लें, मगर जब तक आप उनको अपने जीवन में नहीं अपनाते तब तक उसका कोई लाभ नहीं। हमेशा क्रोधित रहना, ठीक उसी तरह है, जैसे जलते हुए कोयले को किसी दूसरे पर फेंकने की इच्छा से खुद पकड़ कर रखना, यह क्रोध सबसे पहले आपको ही जलाता है। क्रोधित होकर हजारों गलत शब्द बोलने से अच्छा, मौन का वह एक शब्द है, जो जीवन में शांति लाता है।

भगवान बुद्ध के जीवन की एक घटना उनके चरित्र का दर्शन कराती है। एक बार महात्मा बुद्ध किसी गांव में गए। वहां एक स्त्री ने उनसे पूछा कि आप तो किसी राजकुमार की तरह दिखते हैं, आपने युवावस्था में गेरुआ वस्त्र क्यों धारण किया है? बुद्ध ने उत्तर दिया कि मैंने तीन प्रश्नों के हल ढूंढने के लिए संन्यास लिया है। बुद्ध ने कहा- हमारा शरीर युवा और आकर्षक है, लेकिन यह वृद्ध होगा, फिर बीमार होगा और अंत में यह मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। मुझे वृद्धावस्था, बीमारी और मृत्यु के कारण का ज्ञान प्राप्त करना है। बुद्ध की बात सुनकर स्त्री बहुत प्रभावित हो गई और उसने उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया। जैसे ही ये बात गांव के लोगों को मालूम हुई तो सभी ने बुद्ध से कहा कि वे उस स्त्री के यहां न जाए, क्योंकि वह स्त्री चरित्रहीन है। बुद्ध ने गांव के सरपंच से पूछा कि क्या ये बात सही है? सरपंच ने भी गांव के लोगों की बात में सहमती जताई। तब बुद्ध ने सरपंच का एक हाथ पकड़ कर कहा कि अब ताली बजाकर दिखाओ। इस पर सरपंच ने कहा कि यह असंभव है, एक हाथ से ताली नहीं बज सकती। बुद्ध ने कहा कि ठीक इसी प्रकार कोई स्त्री अकेले ही चरित्रहीन नहीं हो सकती है। यदि इस गांव के पुरुष चरित्रहीन नहीं होते तो वह स्त्री भी चरित्रहीन नहीं होती। गांव के सभी पुरुष बुद्ध की ये बात सुनकर शर्मिंदा हो गए।

'संघ सशक्तिकरण माह' का महत्व

संघ का सशक्त होना कर्मचारियों की समर्थता का आवश्यक तत्व है। आज संगठन 'संघ सशक्तिकरण माह' का आयोजन कर रहा है। इसकी आवश्यकता और प्रत्येक जनपद शाखा का सशक्त होना क्यों आवश्यक है, यदि इसके बारे में मेरी व्यक्तिगत राय पूछी जाय तो मैं कहूंगा कि हमारी दैनिक समस्याएं हमारे जनपद स्तर की ही होती हैं और उनके निराकरण के लिए हमारे जिला शाखा के स्तर से प्रभावी कार्यवाही की जा सकती है और ऐसी समस्याएं उसी स्तर पर समाप्त की जा सकती हैं।

आज यदि हम देखते हैं तो पाते हैं कि जिन जनपदों में जिला शाखाएं मजबूती से कर्मचारी हितों के लिए तत्पर है, वहां पर कर्मचारियों की आधी से अधिक समस्याएं पहले से ही निवारित हो जाती हैं और शेष का निस्तारण जनपद में हमारे साथी अपनी एकता के सामर्थ्य से कर लेते हैं।

जिन जिला शाखाओं में शाखा सक्रिय नहीं है, वहां यदि देखिए तो अक्सर ऐसी समस्याओं से लोग ज्यादा पीड़ित होते हैं, जो होनी ही नहीं चाहिए। ऐसी स्थिति होने पर उस अमुक जनपद के साथी जब प्रांतीय स्तर पर मदद की अपेक्षा करते हैं तो वहां प्रांतीय स्तर की मदद का भी कोई बड़ा असर नहीं पड़ पाता है, क्योंकि जिले के साथी वहां पर उस स्थिति में होते ही नहीं है कि कोई उनका प्रतिनिधित्व हो। जिसे निर्देश देकर समस्याओं का निस्तारण कराया जा सके।

प्रांतीय संघ के स्तर पर हर सदस्य की आवाज सुनी जाती है। हर सदस्य की समस्या निस्तारण के प्रति हम गम्भीर भी होते हैं और जवाबदेह भी। लेकिन जब तक स्थानीय स्तर पर आप मजबूत नहीं होंगे, आप रोज ब रोज नई समस्याओं से घिरे ही रहेंगे। दूसरी तरफ यदि प्रांतीय संघ कोई बड़ा आह्वान करना चाहे तो आपकी निष्क्रियता आपके जनपद का उचित सहयोग वहां नहीं करने देगी। ऐसी स्थिति में प्रांतीय संघ कहीं न कहीं आपके कारण खुद को कमजोर महसूस करेगा।आप सबसे मेरा अनुरोध है कि अपनी पूरी सामर्थ्य को लगा दीजिए और जिला संघ को मजबूत करिए। जब तक आप जिला स्तर पर मजबूत नहीं होंगे, तब तक प्रदेश स्तर भी उतना मजबूत नहीं होगा जितना आप सोचते हैं।संघ को सशक्त करने में अपना सम्पूर्ण योगदान करिए। आप हैं, तो हम हैं। हम जल्दी ही महात्मा गांधी जी और शास्त्री जी का जन्मदिवस के पर्व को आयोजित कर उसमें अपनी सहभागिता करेंगे। इस अवसर पर मन के भावों को प्रकट करना भी

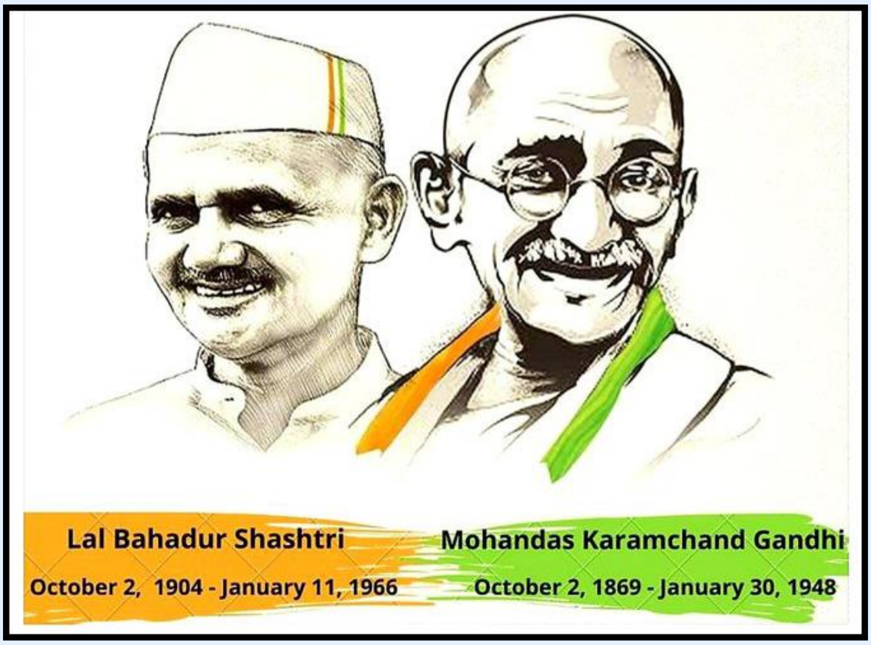

आवश्यक है। महात्मा गांधी समूह की एक चलती फिरती संस्था थे। वे जब भी किसी के कष्ट को सुनते थे, उससे द्रवित भी होते थे और हरसंभव उस तकलीफ को दूर करने का प्रयास भी करते थे। उनके बारे में एक बात याद आ गई, जो आपसे साझा करना चाहता हूं। एक बार उनकी माता जी काफी बीमार थीं। गांधी जी उन दिनों साउथ अफ्रीका में सत्याग्रह कर रहे थे। गांधी जी के भाईसाहब ने उन्हें पत्र लिखा कि कुछ परिवार पर भी ध्यान दो मां बहुत बीमार है, भारत आ जाओ। गांधी जी ने पत्र के उत्तर में लिखा कि मैं परिवार पर ही ध्यान दे रहा हूं, आप भी मां की सेवा कर परिवार का ध्यान दे रहे हैं लेकिन आपके और मेरे परिवार की परिभाषा में अंतर है। मेरे लिए समग्र मानव जाति मेरा परिवार है और साउथ अफ्रीका के परिवारजन को बीच में छोड़कर अभी नहीं आ सकता । हम सब भी अपने भीतर यह व्यापकता लाने का प्रयास करें तो समाज और भी बेहतर होगा। आदरणीय लाल बहादुर शास्त्री जी से सीखने वाली दो चीजें मुझे समझ आती हैं - **“सादगी और कर्तव्य-परायण होना।“ इन महान विभूतियों के चरण कमलों में बारम्बार प्रणाम!**

(डॉ0 नृपेन्द्र सिंह)
प्रदेश अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

अपने अपने किरदारों के बारे में सोचना होगा

(अभिषेक सिंह)
वरिष्ठ प्रांतीय उपाध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

दोस्तों भगवत गीता में लिखा है कि "कर्म करो फल की इच्छा मत करो" मगर मनुष्य की प्रवृत्ति है कि वह फल की इच्छा से ही कर्म करता है । दोस्तों बहुत से कार्य ऐसे होते हैं जिसका लाभ हमें प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होता है जबकि कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिसका लाभ हमें परोक्ष रूप से प्राप्त होता है । दोस्तों संघ के प्रति आपका किया गया कार्य ऐसा कार्य है जिसका लाभ आपको प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों रूप से ही मिलता है संघ आपसे आपके लिए आपका थोड़ा सा समय व एक बहुत ही मुनासिब धनराशि चाहता है वह भी आपके हितों कि रक्षा करने के लिए । दोस्तों मैं कई बार कह चुका हूं कि आपके द्वारा जो सामर्थ्य संघ को प्रदान किया जाता है संघ उसी ऊर्जा से कार्य करता है जैसे कि हवन में जितने घी की आहूति डाली जाती है आग उतने ही प्रज्ज्वलित होती है।

दोस्तों एकता की शक्ति व उससे प्राप्त होने वाले लाभ का एक प्रत्यक्ष उदाहरण आपके सम्मुख रखना चाहता हूं। 2015 बैच के प्रकरण में आप सभी ने मुझे कार्य समिति के अध्यक्ष के रूप में एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी सौंपी थी। माननीय उच्च न्यायालय में स्पेशल अपील में बहुत से लोग या जिले अलग–अलग स्पेशल अपील में गए थे। जिन्होंने कम से कम प्रति व्यक्ति 5000 से लेकर ₹15000 तक खर्च करना पड़ा। इस संबंध में संघ ने जो खर्च अपील में किया, वह प्रति व्यक्ति के हिसाब से 1123 रुपए था। यह एकता का व सामूहिक प्रयास का नतीजा था कि हम जिस धनराशि में जिला कचहरी में मुकदमा नहीं लड़ सकते, हमने उस धनराशि में माननीय उच्च न्यायालय में मुकदमा लड़ा व जीत दर्ज करी। माननीय उच्चतम न्यायालय में विपक्षी द्वारा तीन एसएलपी दाखिल की गई। जिसके जवाब में लड़ने के लिए संघ ने ₹2000 प्रति व्यक्ति अतिरिक्त धनराशि व नए लोगों से ₹5000 प्रति व्यक्ति धनराशि प्राप्त किया इस प्रकार प्रति व्यक्ति 5000 रुपए में हमने माननीय उच्च न्यायालय में एक स्पेशल अपील व माननीय उच्चतम न्यायालय में 3 एस० एल० पी० लड़ी व एडमिशन स्टेज पर उसे खारिज भी कराया । जरा सोचिए कोई व्यक्ति या कोई जिला इस लड़ाई को लड़ता तो उसे कितना धन व सामर्थ्य खर्च करना पड़ता है। संघ के प्रयास से यह दुर्गम कार्य आसानी से सिद्ध हो गया । ऐसे ही कितने ही कार्य हैं जो अभी हमें करने हैं और वह तभी हो पाएंगे जब हम इसी तरह साथ रहेंगे । दोस्तों सरकार हमारे हितों व अधिकारों को लेकर उदासीन है। हमारी आवाज को सुनने के लिए बहरी है। महान क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त जी ने कहा था कि "बहरों को अपनी आवाज सुनाने के लिए हमें अपनी आवाज तेज करनी पड़ेगी"। हम अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए अपनी आवाज तभी तेज कर सकते हैं जब हम एक साथ होंगे । अन्त में आप सभी से इतना कहना चाहता हूं कि :-

करनी होगी गुड़ाई, बीज रोपना होगा
अपने खून पसीने से, उसे सींचना होगा
देखा है जो स्वप्न, हरे-भरे बागों का
तो हमें अपने अपने किरदारों के बारे में सोचना होगा।।

जय संघ, जय हिंद।

सच्ची वसीयत

एक गाँव में एक व्यक्ति के पास 19 ऊँट थे, एक दिन उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के पश्चात उसकी वसीयत पढ़ी गई, जिसमें लिखा था कि- "मेरे 19 ऊँटों में से आधे मेरे बेटे को, 19 ऊँटों में से एक चौथाई मेरी बेटी को और 19 ऊँटों में से पाँचवा हिस्सा मेरे नौकर को दे दिया जाए।"

सब लोग चक्कर में पड़ गये कि बँटवारा कैसे हो। 19 ऊँटों का आधा अर्थात एक ऊँट काटना पड़ेगा, फिर तो ऊँट मर जाएगा। चलो एक को काट दिया जाए तो बचे 18, उनका एक चौथाई यानी साढ़े चार फिर? सब बड़ी उलझन में थे कि पड़ोस के गांव से एक बुद्धिमान व्यक्ति को बुलाया गया, वह बुद्धिमान व्यक्ति अपने ऊँट पर चढ़कर आया, समस्या सुनी, थोड़ा विचार किया फिर बोला- "इन 19 ऊँटों मे मेरा ऊँट भी मिलाकर बांट दो।" सबने सोचा कि एक तो मरने वाला पागल था जो ऐसी वसीयत करके चला गया और अब ये दूसरा पागल आ गया जो बोलता है कि उनमें मेरा भी ऊँट मिलाकर बाँट दो। फिर भी लोगों ने सोचा बात मान लेने में क्या हर्ज है। वसीयत के मुताबिक = 19 ऊँट् 01 ऊँट बुद्धिमान व्यक्ति का तो कुल 20 ऊँट हो गए।

20 का आधा 10 बेटे को दे दिया गया,

20 का चौथाई 05 बेटी को दे दिया गया,

20 का पाँचवा हिस्सा 04 नौकर को दे दिया गया।

अब सबका जोड़= 10+5+4=19; बच गया 1 ऊँट जो बुद्धिमान व्यक्ति का था, वो उसे लेकर हंसी खुशी अपने गाँव लौट आया।

इस तरह 1 ऊँट मिलाने से बाकी 19 ऊँटों का बँटवारा सुख, शान्ति, संतोष व आनन्द से हो गया। इसी तरह हम सबके जीवन में भी 19 ऊँट होते हैं।

05 ज्ञानेन्द्रियाँ – आँख, नाक, कान, जीभ व त्वचा।

05 कामेन्द्रियाँ – हाथ, पैर, जीभ, मूत्र-द्वार, मल-द्वार।

05 प्राण – मान, अपमान, सम्मान, ब्यान, उद्वान।

04 अन्तःकरण – मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार। कुल 19 ऊँट होते हैं।।

सारा जीवन मनुष्य इन्हीं 19 ऊँटों के बंटवारे में उलझा ही रहता है और जब तक उसमें आत्मा रूपी ऊँट नहीं मिलाया जाता, यानी कि आध्यात्मिक जीवन नहीं जीया जाता। तब तक सुख, शांति व आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती।

यही थी 19 ऊँटों की कहानी।

(नीरज श्रीवास्तव)
प्रांतीय कोषाध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

02 अक्टूबर विशेष

आज के परिवेश में नैतिकता का पतन अपनी चरम सीमा पर है। कुछ लोग किसी भी महापुरूष अथवा किसी प्रसिद्ध व्यक्तित्व को बिना जाने समझे भला-बुरा कहकर अथवा अपशब्द कहकर अपनी उच्च कोटि की तुच्छ मानसिकता का प्रदर्शन करने से पीछे नहीं हटते हैं, लेकिन कुछ पढ़े लिखे बैद्धिक युवा मित्र भी गांधी जी का विरोध करते हैं। ऐसे में यह कहना उचित होगा कि आप सभी बंधुओं को गांधी जी के बारे में गहन अध्ययन करना चाहिए, ताकि सभी भ्रांतियों से मुक्त हो सके। आज के परिवेश में हम चाहे जितना भी धन संचय कर लें लेकिन अपने बच्चों को किसी अच्छे विद्यालय में पढाने में लोहा लेना पड़ता है, जबकि उस समय में गांधी जी अपनी शिक्षा पूर्ण करने (1888-91, बैरिस्टर की पढाई, लंदन यूनिवर्सिटी) विदेश गए थे जिससे स्पष्ट है कि गांधी जी एक सम्पन्न परिवार से थे। फिर भी अपने जीवन पर्यंत गांधी जी ने देश की गरीबी को देखते हुए तन ढकने के लिए सदैव एक ही वस्त्र का उपयोग किया। इंग्लैंड में अध्ययन करते समय गांधी जी ने सर एडविन अर्नाल्ड द्वारा अनुदित गीता पढ़ी। इसने उनके

दृष्टिकोण को सर्वाधिक प्रभावित किया तथा उन्हें कर्म योगी बनाया। वे गीता को अपना पथ प्रदर्शक तथा आध्यात्मिक निर्देश ग्रंथ मानते थे। गांधी जी ने सत्य व अहिंसा के नैतिक सिद्धांतों तथा आदर्शों के बारे में गीता से बहुत कुछ सीखा। इसके अतिरिक्त गाँधी जी ने उपनिषद, पतंजलि के योग सूत्र, रामायण, महाभारत, जैन तथा बौद्ध धर्म की पुस्तकों का भी अध्ययन किया था। इन पुस्तकों के अध्ययन से सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह में उनकी आस्था बहुत दृढ़ हो गई थी। गांधी जी ने जब अपनी कानून की पढ़ाई खत्म कर इंग्लैंड में वकालत शुरू की तो वह पूरी तरह असफल साबित हुए। दक्षिण अफ्रीका में वह बहुत सफल वकील बने और उनकी आमदनी दक्षिण

अफ्रीका में 15000 डॉलर सालाना तक हो गई थी। जरा सोचिये, 99% भारतीयों की सालाना आय आज भी इससे कम है, फिर भी अफ्रीका छोड़ कर गांधी जी भारत की दीन दशा देखकर भारत वापस आये। अनेकों आंदोलनों की शुरुआत की और बिना शस्त्र उठाये अंग्रेजो से अपनी अनेकानेक मांगे मनवाई। आज के परिवेश में हम अपने आप से सवाल करें कि हम आप में से कितने देशभक्त है जो अपनी इतनी अच्छी नौकरी छोड़कर देश के लिए महात्मा की तरह जीवन गुजारने को तैयार हैं ??

स्वंत्रता प्राप्ति के पश्चात कुछ पत्रकार गाँधी जी के पास आए और उनसे अंग्रेजी में बात करने लगे। मगर गाँधी जी ने सभी को रोका और कहा कि, **"मेरा देश अब आजाद हो गया है, अब मैं हमारी हिन्दी भाषा ही बोलूँगा।"** आज हम में से कुछ ज्यादा पढ़े लिखे लोग देश आजाद होने के बावजूद हिंदी भाषा को बोलने वाले को हीन भावना से देखते हैं और हिंदी को गवारो की भाषा की श्रेणी में रखे हुए हैं।

गांधी जी भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व के लिए सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक महान दार्शनिक और प्रेरणाश्रोत हैं। इसी सापेक्ष में 15 जून 2007 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में 02 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस स्थापित करने के लिए मतदान हुआ। महासभा में सभी सदस्यों ने 02 अक्टूबर को इस रूप में स्वीकार किया जो को भारत के लिए और हम सभी के लिए बड़े ही गर्व का विषय है। उस महापुरुष के बारे में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। अहिंसा अपनाने से आपसी सौहार्द बढ़ता है। भारतीय राजव्यवस्था यहां तक कि **भारतीय न्यायपालिका** में भी गांधी विचारधारा से ओतप्रोत होकर मिडिएशन सेन्टर खोला गया है जहाँ मुकदमो का निस्तारण बातचीत के माध्यम से हल करवाया जाता है। अहिंसात्मक न होने से मानवजाति का नुकसान ही होता है आपसी रंजिश बढ़ती है मानवता को भी कभी-कभी शर्मिंदा होना पड़ता है। अगर हम गांधी जी का अनुकरण न करके अपने धर्मो का ही सही मायने में अनुकरण करें तो कोई भी धर्म हमें हिंसा करना नही सिखाता।

आइये हम सभी संकल्प करें कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं सादगी और त्याग के पर्याय, पूर्व प्रधानमंत्री स्व० लालबहादुर शास्त्री जी के बताए मार्गों को आत्मसात करके वर्तमान में हम जहां भी है, अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी निष्ठा व ईमानदारी से करके उनको सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे व स्वच्छ भारत अभियान की तरह बाहरी गंदगी के साथ अपनी आत्मिक गंदगी को भी दूर करेंगे।

जय हिंद - जय भारत।

(भागवत शुक्ल)
प्रांतीय संयुक्त सचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

जब तक आँखें बंद रहेंगी, तब तक यह श्मशान जलेगा।
कभी तो इन लाशों से उठकर, कोई तो इंसान चलेगा।

परिवर्तन का तीर चलाकर,
पत्थर से ज्वाला दहका कर,
एक बार हुंकार लगा कर,
थके अंग का दाह करा कर,
प्रज्ज्वल करने क्रान्ति की ज्वाला,
बुझा दीप कोई पुनः जलेगा।
सदियों से जो दबा, जमा, वह
रक्त कहो न क्यों उबलेगा,
जब तक आँखें बंद रहेंगी,
तब तक यह श्मशान जलेगा।

लाक्षागृह की कपट अग्नि है,
लेकर आयी युद्ध भयावह,
कहा पार्थ ने कृष्ण से- मुझसे
अरि पर न हथियार चलेगा।
कृष्ण कहे अर्जुन से - ज्ञानी,
युद्ध नहीं अब है टल सकता।
अधिकारों की रणभूमि यह,
कुरुक्षेत्र, तज मोह के बंधन।
अभिमन्यु का शोक त्याग फिर,
अर्जुन का गांडीव चलेगा।
जब तक आँखें बंद रहेंगी,
तब तक यह श्मशान जलेगा।

(राजेश तिवारी)
समीक्षा अधिकारी (हिंदी)
मा० उच्च न्यायालय इलाहाबाद, लखनऊ
खण्डपीठ, लखनऊ

अब कहां

वो बचपना,
वो दिन,
वो खेत-खलिहान,
अब कहां !

वो भैंस का कच्चा दूध,
वो मम्मी की बनाई रोटी,
वो पापा का प्यार भरा गुस्सा,
अब कहां !

वो टीचर की पड़ती डांट,
वो पेट दर्द का बहाना,
वो शीत लहर की छुट्टी,
अब कहां !

वो बचपना, वो सुकून,
वो लम्हें, अब कहां !

(रंजीत कुमार)
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय,
बरेली

जब तक है सांस, बढ़ते चलें,
जीवन है सौगात, बढ़ते चलें।
खुद पर ही विश्वास कर,
पहले खुद से प्यार कर,
तब सब होंगे साथ, बढ़ते चलें।
पथ कठिन अवश्य होगा,
पग पग पर आलस्य होगा,
खुद को दे आवाज, बढ़ते चलें।
कड़ी धूप का प्रहार होगा,
संग आशा का संचार होगा,
हार न अपनी मान, बढ़ते चलें।
सांझ भी आएगी चिन्तन की,
छटा भी कम होगी चितवन की,
पूर्णता को शेष जान, बढ़ते चलें।
निशा बाट जोहती होगी,
नींद हमें भी खोजती होगी,
कितनी है मंजिल आसान, बढ़ते चलें।

तुम हो युग युग की आस,
तेरा ज्ञान, जग का विश्वास,
तेरी कृपा, हर सांस सांस,
तुमसे प्रीति, मिटा दे संत्रास।
तेरी मुरली की धुन,
प्राणों की है चाह, जरा सुन,
यह पीर तभी मिटेगी,
जब होगा तेरा आभास।
हर नयन की अभिलाषा,
वाणी तेरी, प्रेम की भाषा,
तेरा चिन्तन जगत की आशा,
तुझको भजे केवल वही,
जिसमें हो प्रभु तेरा ही वास।

(प्रभात शुक्ल)
अनुभाग अधिकारी (डिक्री)
मा० उच्च न्यायालय इलाहाबाद, लखनऊ
खण्डपीठ, लखनऊ

तुझ संग जो स्वयं को पाऊँ
लगे जन्म सफल बनाऊँ,
स्वयं को निमित्त पाऊँ,
खो जाऊँ तुझको जो बिसराऊँ,
किन्तु कैसे यह प्रीत बचाऊँ?
मन बहुत भ्रमित है
सोच सोच कर व्यथित है।
जो देह होती भूखी,
भावनायें भी होती सूखी,
तब यह अहसास ना होता,
जीवन को कोस रहा होता,
कदाचित तुमसे ना जुड़ पाता।
तेरे अस्तित्व से कोई आशा न होती,
मैं समझता कि तू कहीं नहीं है,
यही सत्य मेरे समक्ष होता,
मन रुग्ण होता,
पशुता सी होती भीतर,
भूख में कुछ भी ना दिखाई देता,
दोनों रूपों में कौन सा रूप
तुम्हारे समीप है?
यह रहस्य अगर सुलझ जाता,
तू सर्वग्राह्य हो जाता
भेदभाव खत्म हो जाता।

पाठकों से,

कविताएं हमेशा से भावों को व्यक्त करने का साधक रहीं हैं। जिन बातों को बोलकर व्यक्त नहीं किया जा सकता है, कविताएं वह आसानी से कह जाती हैं। अक्सर अपनी कविताओं में कवि दूर तक जाता दिखता है, लेकिन फिर वापस जिन्दगी और रिश्तों के मर्म पर आ जाता है। कुछ कविताएं तो पाठक को भीतर तक झकझोरने की सामर्थ्य एवं विशेषता रखती हैं। कुछ कविताओं में कल्पना की उड़ान है तो कुछ में मन की पीड़ा एवं द्वन्द्व की अभिव्यक्ति है। कुछ कविताएं विषयों पर अपनी संवेदनापूर्ण चोट करती हैं।

मैं मूलतः कवि नहीं हूं बल्कि न्यायिक तन्त्र से सम्बद्ध एक छोटा-सा पुर्जा हूं। जब-जब मर्म उद्वेलित होता है या भावनाओं का अन्तर्द्वन्द्व होता है तो भाव शब्दों का लिबास पहनाने की सिर्फ जुस्तजू करता हूं। तब प्रस्फुटित हो जाती है एक कविता।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी कविताएं पाठकों के मर्म को स्पर्श कर पाने में अवश्य सफल होगी एवं मेरी भावाभिव्यक्ति का उद्देश्य सार्थक सिद्ध होगा।

रोज रोज

अपेक्षाएं, उम्मीदें, तो कभी जरूरतें,
चुनौती बनती, रोज रोज।
लेकिन मन अट्टहास करता, जगाता एक नई उमंग
नया उत्कर्ष, पा जाता नवीन संकल्पए रोज-रोज।
न थकान, न अवसाद, प्रस्फुटित होती नवचेतना
जगाती कर्तव्य का बोध, रोज-रोज।
कुछ खो जाने का डर, कुछ पा जाने की अभिलाषा
बैठने न देती चैन से, उलझती-सुलझती अनुभूतियां
और जुट जाता संकल्पित मन, रोज-रोज।
कर्तव्यों की इतिश्री पर, पा जाता मन विश्रान्ति,
फिर, कदम-दर-कदम, निभाता जाता अपनी भूमिका
रोज-रोज।

(सुधीर कुमार विश्नोई)
41/161 न्यायालय परिसर
बिजनौर, उत्तर प्रदेश

गज़ल

उनसे नजरे मिली, जाने क्या हो गया।
दिल धड़कने लगा, सिलसिला हो गया।।
एक दिल था मेरा, क्यों न मेरा रहा ।
रात जगता रहा, क्या नींद को हो गया।।
आज उनसे मुलाकात होने को है ।
जो सोंचा था कहना, मैं भूलता ही गया।।
यादों मे मैने जो सजाया था अब तक ।
एक आंधी सी आई, सब उड़ सा गया।।
मै अब जान पाया, ये मोहब्बत है क्या।
जब सब लुट गया,मै तनहा रह सा गया।।

(शैलेन्द्र कुमार चौधरी)
सेवानिवृत पेशकार
जनपद न्यायालय, उन्नाव

Johny Johny ...
Yes Papa!
Reading Writing ...
Yes Papa!
Lots of Tension...
Yes Papa!
Too Much Work....
Yes Papa!
Family life...
No Papa!
BP-Sugar...
High Papa!
Yearly Saving...
Joke Papa!
Monthly income...
Low Papa!
Personal Life...
Lost Papa!
Weekly off...
Ha Ha Haa!

RAVI VISHWAKARMA
(JUNIOR ASSISTANT)
DISTRICT COURT FARRUKHABAD

संघ एवं कर्मचारी हित

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति मिलकर किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्यशील हो तो उन्हें संघ की आवश्यकता होती है। उद्देश्य चाहे अल्पकालीन हो या दीर्घकालीन, संघ की आवश्यकता में कमी नहीं आती। एक संस्थागत संघ को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कुशल संघ का निर्माण करना चाहिए क्योंकि एक कमजोर संघ अच्छे परिणाम को भी मिट्टी में मिला सकता है। प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का आधार सुदृढ़ संघ एवं समन्वय व्यवस्था ही है। आज मनुष्य की सभी क्रियाएँ संघ के अन्दर ही होती है। संघ के बिना मानव जीवन की कोई भी क्रिया व्यवस्थित रूप से नहीं चल सकती है। हम संघ में ही जन्म लेते हैं, शिक्षा प्राप्त करते हैं तथा हममें से अधिकांश लोग संघ में ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। संघ के बिना संस्था वैसे ही प्रभावहीन है जैसे बिना आत्मा के शरीर। किसी भी संस्थागत संघ को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कुशल संघ का निर्माण करना चाहिए। इस प्रकार स्पष्ट है कि संघ व्यक्तियों के कार्य स्थल पर आपसी सम्बन्धों, भूमिकाओं व पद स्थितियों का ढांचा है, जिसके अन्तर्गत सभी व्यक्ति एक एकीकृत इकाई के रूप में संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयास करते हैं।

(विजय बहादुर सिंह)
मीडिया प्रभारी/प्रचाार सचिव
उ०प्र० दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, औरैया
सम्बद्धः मा० उच्च न्यायालय, लखनऊ खण्डपीठ

इसी प्रकार से हमारे जिला एवं सत्र न्यायालयों में जो विविध प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त कर्मचारी गण कार्यरत है। उनकी समस्याओं के निराकरण के लिए एक मजबूत संघ की आवश्यकता है। कदम–कदम पर कर्मचारी गण कभी अधिकारियों से वैचारिक मतभेदों के कारण, वेतन विसंगतियों के कारण, कार्य की अधिकता से कारण, कभी अधिवक्ताओं के द्वारा उत्पन्न की गयी अनर्गल समस्याओं के कारण कहीं न कहीं प्रताड़ित होते रहते हैं। अकेले होने के कारण जिस प्रकार अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ठीक उसी प्रकार से वो चाह कर भी अपनी समस्याओं का हल नहीं निकाल पाते हैं और उन्ही समस्याओं के कारण कुंठित होकर गलत कदम उठा लेते हैं या अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं और अंदर ही अंदर टूटते चले जाते हैं।

पिछले कुछ समय से जब से हमारे दीवानी न्यायालय का नेतृत्व कुशल हाथों में आया है, परिणाम स्वरूप उपरोक्त समस्याओं में से कुछ समस्याओं का निराकरण संघ के प्रयासों द्वारा होने के संकेत मिलने शुरू हो गये हैं, जैसे शेट्टी आयोग की सिफारिशों को लागू करवाने के लिए संघ ने मा० उच्च न्यायालय में कानूनी प्रक्रिया के आधार पर शेट्टी आयोग की सिफारिशों को लागू करवाने हेतु अथक प्रयास जारी रखा हुआ है, जो अपने अन्तिम पड़ाव पर है। इसके अतिरिक्त उन जिलों में जहां पर अभी तक संघ का अस्तित्व ही नहीं था, वहां पर एक मुहिम के तहत माह सितम्बर 2021 में **"संघ सशक्तिकरण माह"** चलाकर कर्मचारी संघ का गठन करवाया जा रहा है। संघ द्वारा **"उद्घोष"** नामक त्रैमासिक ई–पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया जा चुका है। ऐसे बहुत से कार्य सम्पादित हो रहे हैं जो आने वाले समय में संघ की प्रतिष्ठा में दिनोदिन वृद्धि ही करेंगे। मैं व्यक्तिगत रूप से संघ के द्वारा किये जा रहे प्रयासों के लिए संघ के पदाधिकारियों का हृदय से आभारी हूँ और आशा करता हूँ कि संघ के द्वारा आगे भी कर्मचारियों के हितों के लिए निरंतर प्रयास जारी रहेंगे।

मुश्किलात-ए-कचहरी

नमस्कार साथियों आशा करता हूँ आप सब स्वस्थ होंगे। मैं आपका ध्यान अपने न्याय विभाग की कुछ सार्वभौमिक समस्याओं व उनके समाधान की ओर आकृष्ट कराना चाहता हूँ।

(राहुल चंद्र गौतम)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, झांसी

सामंजस्य की कमी

हमारे विभाग के कार्य में आपसी सामंजस्य की बहुत कमी है, बहुत बार यह देखा जाता है कि एक ही न्यायालय या कार्यालय में काम करते हुऐ भी हम एक- दूसरे से सामंजस्य नहीं बना पाते, कोई कर्मचारी अगर सिविल कार्य देख रहा है तो वह क्रिमिनल कार्य करने वाले को सहयोग नहीं करता या उसकी अनुपस्थिति में कोई विभागीय डाक आदि नहीं लेता, इससे होता यह है कि वह व्यक्ति भी संबंधित के साथ वैसा ही करता है। हमें यह कोशिश करना चाहिए की अपने साथी कर्मचारी के साथ आपसी सामंजस्य बना रहे।

सहयोग की कमी

मैनें देखा है कि कभी-कभी किसी कर्मचारी के पास ऐसी परिस्थिति आती है कि उसे दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। इस से संबंधित एक वृतांत में आपको बताता हूँ, मेरे जनपद के एक न्यायालय में पेशकार महोदय अर्जित अवकाश पर थे साथ ही जो वरिष्ठ लिपिक थे वो आकस्मिक अवकाश पर थे तब उस न्यायालय में कार्यरत कनिष्ठ लिपिक को कार्यालय व न्यायालय दोनों संभालने पड़े, ऐसी स्थिति में अलग–अलग न्यायालयों में कार्य कर रहे उसके साथी कर्मचारी वहाँ पहुंच गये व उसके कार्य को जोकि २ घंटे में खत्म होता उसको आधा घंटे मे खत्म करके उस कर्मचारी पर से कार्य का दबाव हटा दिया। मैं यह इसलिए बता रहा हूं क्योंकि जब भी आपको लगे की किसी भी न्यायालय के कर्मचारी को इस प्रकार की जरूरत है तो उसे इस प्रकार का सहयोग जरूर करें।

विश्वास की कमी

अपने विभाग में ज्यादातर कर्मचारी एक दूसरे पर विश्वास नहीं करते, अगर लिपिक अपने कार्यालय का कार्य कर रहा होता है और उसी समय अन्य न्यायालय से अंतरित पत्रावलियां लेकर कोई लिपिक आता है तब वह पत्रावलियां लेकर रिसीविंग बाद में देने की बात कहे तो जो लिपिक अंतरित पत्रावलियां लेकर आता है वह तुरंत रिसीविंग देने पर जोर देने लगता है। आपका वह साथी भी आपके जैसा ही कर्मचारी है इसीलिए उस पर विश्वास रखिए और उसे उतना समय दीजिए कि वह उन पत्रावलियों पर एक नजर डाल सके।

मेरा यह लेख इसी उदेश्य से था कि अगर हमनें ऊपर लिखीं हुई यह तीन समस्यायें खत्म कर दीं तो इससे न्यायालय कर्मचारी को काफी हद तक राहत मिलेगी और वह मानसिक तनाव से मुक्त रहेगा।

पुलवामा अटैक: सबूत-ए-बुजदिली

जिस रोज आगोश-ए-माशूक थे सब
आन-ए-वतन में वीरों ने खून बहाया था।
बर्फीली सफेद चादर सुर्ख लाल हुई
कई मांओं ने लाल गंवाया था।

बुजदिलों ने पीठ पर वार किया
वीरों ने माटी का कर्ज चुकाया था।
इक इक आंख चीखकर रोई थी
हरेक कलेजा फटकर चिल्लाया था।

अब न हो सर्जिकल स्ट्राइक कोई
न ही चौन-ओ-अमन का पैगाम हो।
उन वीर जवानों की शहादत के बदले
अपने नक्शे में पूरा पाकिस्तान हो।

नाम तो हो पाकिस्तान का
पर सिर्फ इतिहास की काली किताबों में
कश्मीर तो हमारा था ही जमाने से
भारत में ही सिंध-बलूचिस्तान हो।

काफिराना सा "काफिर"

जिसे चाहा वो कभी मिला नहीं
जिसे पूजा वो खुदा रहा नहीं
क्या करूं ऐसी किस्मत का "काफिर"
मैं उसका हुआ जो कभी मेरा नहीं।
कमाने निकला था चंद खुशियां
क्या पता ये ठोकरें कहां से मिली
एक तुम हो जो गैर मानते हो हमें पर,
तुम दिल में रहते हो मुझसे जुदा नहीं।।
वो मेरा तड़पना तरसना
वो तेरा रूठना मनाना
तेरी चार दिन की गर्मजोशी
फिर एकाएक हमें भूल जाना
वो तेरी अनगिनत खताएं
उसपे बेशुमार जफाएं
फिर तेरी इक खुशी की खातिर
मेरा सब कुछ भूल जाना
गर तेरी जेहमत बना हुआ है,
ये मेरा अंदाज आशिकाना
दोबारा ढूंढे न मिलेगा
अब से ये "काफिर" पुराना।

(उमेश चन्द्र जायसवाल 'काफिर')
स्थायी सदस्य (सम्पादकीय समिति)
'उद्घोष' त्रैमासिक ई-पत्रिका
संगठन सचिव
उ०प्र० दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, बस्ती

नया लिखने की कोशिश

जब भी लिखता हूँ कुछ नया, पुराना लिख जाता हूँ।
सोच है आज की फिर भी बीता हुआ वो जमाना लिख जाता हूँ
जब भी लिखता हूँ कुछ नया, पुराना लिख जाता हूँ।
जब भी सोचता हूँ लिखूं इस मतलबी समाज के बारे में
कलम चलती नहीं मेरी, फिर क्या....
मैं मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम का फसाना लिख जाता हूँ।
जब भी लिखता हूँ कुछ नया, पुराना लिख जाता हूँ।
कोशिश करता हूँ लिखूं इस आज के कोलाहल वाले समाज के बारे में
कानों में गूंजता है कर्कश स्वर, फिर क्या....
मैं राधा का गाना और मुरलीधर की वंशी का तराना लिख जाता हूँ।
जब भी लिखता हूँ समाज में फैले जाति-पात और ऊंच-नीच के बारे में,
हृदय से निकलती है एक आह, फिर क्या....
मैं उस नाव वाले केवट का गाना सबरी के गीतों का तराना लिख जाता हूँ।
जब भी लिखता हूँ कुछ नया पुराना लिख जाता हूँ।

(अतुल त्रिवेदी)
मुंसरिम /रीडर
जनपद न्यायालय, लखीमपुर

गुरु महिमा

गुरु के चरणों में, कोटि नमन है हमारा
सदियों से कह रहा, जमाना ये सारा।
संस्कार हैं हमारे,, आदर्श हैं हमारे,
उनके चरण की धूल, कवच हैं हमारा।
जीना हमें सिखाया, बुनना हमें सिखाया
कर्तव्य के पथ पर, चलना हमें सिखाया।
सौभाग्य है हमारे, संजीवनी हमारे
जीवन भविष्य के, मार्गदर्शक हमारे।
बचपन है सँवारा, भविष्य को दिखाया
अंधकार- पथ पर, दीपक है जलाया,
चुनौतियों के पथ पर, चलना हमें सिखाया।
ये कहानी गुरु की, बोलू कहाँ तक जुबानी,
गुरु भगवान है हमारे, अभिमान है हमारे,
सारे जनम- जनम के, उपकार हैं हमारे।

(अमरेन्द्र प्रताप सिंह)
प्रकीर्ण लिपिक
जनपद न्यायालय, बस्ती

गीत

मन में याद, याद में तुम हो ।
तुझ में है सपने अन गिन ॥
आंगन है तुलसी का चौरा
और नीम यूँ झूम रही है
गिल्लू भागा दौड़ा फिरता
गौरैया कुछ चुग रही है
बाबा की धोती गीलाकर
मुनुवा रोये हर पल-छिन
मन में याद,याद में तुमहो ..अनगिन
याद तुम्हारी आए जब भी
पूनम के खिलते -खिलते
चकवा- चकवी की दूरी से
अधर नहीं खिलते-मिलते
रात कट गई आंखें फाड़े
और न कटता है यह दिन
मन में याद, याद में तुमहो अनगिन
टहनी पर रोटी नहीं खिलते
जीवन इतना सरल नहीं
पानी ही हिम हो जाता है
हिम ही है पर तरल नहीं
संबंधों का यही रूप है पर
कितना है बहुत कठिन
मन में याद, याद में तुम हो अनगिन
हल्दी दही का अंतः लेपन
पुलकित हो जाता है मन
रस्मों से भींगा संबंध है
जाने कब उठ गया शगुन
शोख ननद के गालों परअब
उठता अछ्त है छिन-द्दिन
मन में याद, याद में तुम हो.... अनगिन
पाणि ग्रहण के संस्कार में
हाथों से हाथों का तर्पण
कितना कठिन है एक पिता को
क्षण भर में बेटी को अर्पण
दुनिया की यह रीति यही है
पर कितना है क्षण मुश्किल
मन में याद, याद में तुमहो... .. अनगिन

कोरोना

वक्त के हाथ में, अब भी वही कबीरा है ।
चादर झीनी वही, घर अपना फूँक आते है ॥

राग जीवन का मै,जब भी समझना चाहा ।
दर्द में प्यार के, हर गीत उभर आते हैं ॥

मानवीय रिश्तों पर, मँडराता ये कैसा साया ।
अपने लाशों को भी, पहचान से कतराते हैं ॥

घुल गया जहर ,इस कदर से हवाओं में ।
अधजली लाशें, शमशान में छोड़ आते हैं ॥

मास्क पहने हैं, बदन किट से ढ़के सारे,
फिर भी, मिलने से वे डर जाते हैं ॥

अस्पतालों का हाल, मत पूछिये जनाब ।
सिर्फ कागज पे ही, आक्सीजन भी भरे जाते हैं ॥

रक्त सम्बन्धों के, रिश्ते भी तार-तार हुये ।
लोग अनायास ही, अब दूरियाँ बनाते हैं ॥

रूखसती का ये, कैसा है सलिका तेरा ।
ये कोरोना है, बहाने से निकल जाते हैं ॥

(डॉ0 कुमार विनोद)
प्रशासनिक कार्यालय
जिला एवं सत्र न्यायालय, बलिया

"कोरोना"

देश हो गया पिंजड़ा सा ,
परदेश भी पिंजड़ा हो गया
हैं छोटे छोटे डिब्बे में
संसार भी सबका जुदा हो गया
लाशें बढ़ रही मानव की
मानव खिड़की से झांक रहा
कोई इधर को ताक रहा
और कोई उधर को ताक रहा
नतमस्तक हो गए देश सभी
अदृश्य दुश्मन बस याद रहा
हथियार रह गये धरे यहाँ, पर
किसी का न कोई काम रहा
अस्त्र शस्त्र सब ज्ञान से लैस
सबका झुककर प्रणाम रहा
शायद वह न मरे, बस हारे
बस छुपकर जीतना ही काम रहा
कोई देख न पाया, न दिख ही रहा
किसके किसके साथ चिपक रहा
जब तक मैं जान पाता उसे
तब तक सब बीमार हो जाता
मैं सोच रहा महमारी इसे
या मानव विकास का भूल रहा
या कोई छुपी हथियार है ये
या छुपा हुआ हो हमला रहा
है जीव का जीव से जीव हत्या
है सूक्ष्म जीव हो हथियार रहा
है युद्ध सही बुद्धिमानी इसमें
घर बैठना विजय का आखरी वार रहा ।

(मारुती)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, वाराणसी

हिन्दी दिवस

दूर -दूर जब दिखती हिन्दी
मातृ भाषा कहलाने को
संघर्ष भी चलता हरदम
दूसरी भाषा पाने को
.
क्षणिक जवाब में निश्छल हिन्दी
सॉरी से है सुन्दर माफी
ज्ञान और विज्ञान में बढ़कर
मातृ भाषा होती है काफी

एक विडम्बना हममें भी है
तुमने भी है अपनायी
बच्चे पढ़ते इंग्लिश में
हिन्दी की करते रूसवाई

वर्चस्व की लड़ाई अपने में है
भाषा हिन्दी भी अपनी है
भागते पीछे जीवन भर जिसके
अन्तर उसके कथनी-करनी में है

कुछ है अनजानी सी भाषा
जिस पर हम गौरवान्वित होते
जीवन भर भी शीशा झुका दे
फिर भी उसके कभी न होते

कौन देता है माँ से ज्यादा
रोजी-रोटी या हो प्यार
जीवन को जितना भी चाहिए
देती है वो सब सत्कार

घटती -बढ़ती उम्र है होती
पर वे ममता कभी न जाती
विदेशी भाषा हो जैसी भी
माता कभी नहीं बन पाती
बस वो आया ही रह जाती
बस वो आया ही रह जाती

हर उस बेटे को समर्पित जो घर से दूर है

बेटियाँ ही नहीं
बेटे भी घर छोड़ जाते हैं।

जो तकिये के बिना कहीं भी सोने से कतराते थे।
आकर कोई देखे तो वो, कहीं भी अब सो जाते हैं।
खाने में सौ नखरे वाले, अब कुछ भी खा लेते हैं।
अपने रूम में किसी को भी नहीं आने देने वाले।
अब एक बिस्तर पर सबके साथ एडजस्ट हो जाते हैं।

बेटे भी घर छोड़ जाते हैं !!

घर को याद करते हैं लेकिन कहते हैं बिल्कुल ठीक हूँ।
सौ-सौ ख्वाहिश रखने वाले, अब कहते हैं कुछ नहीं चाहिए।
पैसे कमाने की जरूरत में, वो घर से अजनबी बन जाते हैं।

बेटे भी घर छोड़ जाते हैं।

बना बनाया खाने वाले अब वो खाना खुद बनाते हैं,
माँ, बहन, बीवी का बनाया अब वो कहाँ खा पाते हैं।
कभी थके, हारे भूखे भी सो जाते हैं।

बेटे भी घर छोड़ जाते हैं।

मोहल्ले की गलियां, जाने-पहचाने रास्ते।
जहाँ दौड़ा करते थे अपनों के वास्ते,
माँ बाप यार दोस्त सब पीछे छूट जाते हैं।
तन्हाई में करके याद, लड़के भी आँसू बहाते हैं।

बेटे भी घर छोड़ जाते हैं।

नई नवेली दुल्हन, जान से प्यारे बहिन, भाई।
छोटे-छोटे बच्चे, चाचा-चाची, ताऊ-ताई,
सब छुड़ा देती है साहब, ये रोटी और कमाई।
मत पूछो इनका दर्द वो कैसे छुपाते हैं।

बेटियाँ ही नहीं साहब, बेटे भी घर छोड़ जाते हैं !!

ऋषि यादव
अध्यक्ष
उ०प्र० दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, फर्रुखाबाद
सदस्य (सम्पादकीय समिति)
'उद्घोष' त्रैमासिक ई–पत्रिका

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ

माँ के जिस कोख से एक बेटा जन्म लेता है, उसी गर्भ में से बेटी भी जन्म लेती है। पर माँ- बाप स्वयं पुत्री के जन्म से दुखी हो उठते हैं। जन्म से माँ- बाप इस लड़की को 'पराया धन' कहना प्रारम्भ कर देते हैं। उसके लालन-पालन, शिक्षा- दीक्षा आदि सभी क्षेत्रों में दृष्टि रखी जाती है। कन्या दबी और सहमी अनुभव करती है, जबकि पुत्र किसी मिथक राज्य के राजा की भाँति

अन्य पुरातन विद्वानों ने भी लिखा है कि "दुरतिक्रमा दुहितरो विपद" अर्थात कन्या की विपत्तियों को पार करना अत्यंत कठिन है, लेकिन अगर घर के वातावरण में ये बदलाव आये, बेटा और बेटी दोनों एक समान है, तो समाज में बदलाव आने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। सबसे पहले कन्या भ्रूण हत्या को रोक कर इसकी शुरूआत करनी होगी। यहाँ समाज में अक्षुण्य और अतुलनीय योगदान देने वाली लड़की को बचाने के लिए हृदय स्पर्शी कविता प्रेषित करा रही हूँ, जो बेटियों के महत्व और आवश्यकता को भी बतलाता है :-

(अंजू सागर)
वाद लिपिक
जिला एवं सत्र न्यायालय, बस्ती

चुप-चुप सब मैं सुनती थी
माँ के पेट के भीतर से...
दादी हरदम क्यों कहती थीं
'बेटा' दे अब 'बेटा' दे...
बहन मेरी प्यारी सी
एक छोटी बहन मुझे देना माँ...
एक जोर का चहटा उसे जड़ देती माँ,
और रो-रो कर, ये कहती थी...
माँग तू एक भाई अब
बेटी का जीवन कठिन बहुत।
दादी भी बेटा माँगे...
माँ भी अब भगवान से अपने,
मेरे बदले में बेटा माँगे...
फिर भी मैंने सोच लिया,
सबका मन मैं हर लूँगी...
मैं अपनी नटखट बातों से,
सबको खुश कर दूँगी...
पर मुझको इतना वक्त ना दिया,
मेरे बाप ने ऐसा पाप किया,
मालूम कर कि मैं लड़की थी,
मुझको पेट में ही मार दिया।
मैं फूलों की खुशबू न ले सकी,
जीवन का स्वाद न चख सकी,
माँ को मैं 'माँ' भी न कह सकी,
अपनी बहन से मैं मिल न सकी...
क्यों ऐसा मेरे साथ किया?
जीवन का सुन्दर ख्वाब दिया,
फिर मौत की आग में झोंक दिया,
बेटी बन क्या मैंने कोई पाप किया???
क्यों ऐसा मेरे साथ किया??

माँ के चिल्लाने के बीच, अचानक किसी के रोने की आवाज आई।
डॉक्टर ने बाहर आकर बताया, आपके घर बेटी है आई।
खिलते हुए चेहरे, अचानक मुरझा गए,
खुशी से ना सही, अफसोस से वो उसे घर लेकर आ गए।
मोहल्ले वालों ने पूछा, क्या हुआ है?
लड़की हुई है कहकर, घरवाले अपना मुंह लटका गए।
और यह देख कर, भगवान की भी आंखों में आंसू आ गए।
उसने भी सोचा कि, कैसे लोग हैं,
ये जो मेरी सबसे खूबसूरत रचना पर दाग लगा गए।
और यह देख कर फिर एक बार,
भगवान की भी आंखों में आंसू आ गए।

अब जन्म लिया है तो जीना भी होगा,
जहर है पर फिर भी पीना होगा।
लड़की हो तुम, इस दायरे को निभाओगी,
देर रात को घर से बाहर नहीं जाओगी,
पैर मिला कर बैठो, भला यह भी कोई तरीका है,
लड़कियां अपना मुंह बंद ही रखें, बस यही सलीका है।
पढ़ने जाओगी तुम, पर सिर्फ किताबी ज्ञान पाओगी,
जब बढ़ना चाहोगी जीवन में आगे,
तो अपनों के हाथों ही रोक ले जाओगी।
इतना सब होने पर भी, तुम जीना चाहोगी,
पर इन सब से कभी उभर नहीं पाओगी।

नया जीवन, नई खुशियां, नया घर, नया परिवार,
पर फिर भी स्त्री जीवन की बेड़ियों का जंजाल।
तुम अच्छी बहु, अच्छी पत्नी बनने के वादे करके उस नये घर जाओगी,
और वहां एक अलग ही माहौल पाओगी।
तुम उन्हें अपना, और वो तुम्हें गैर समझेंगे।
दायरों में रहोगी तुम, तभी वो तुम्हें नेक समझेंगे।
उस घर में एक बहू, एक पत्नी, एक मां तो बन जाओगी।
पर एक स्त्री रूप में एक इंसान हो तुम भी,
यह बात शायद उन्हें कभी समझा ना पाओगी।
इसी तरह दूसरों की इच्छाएं पूरा करने में,
तुम अपना सारा जीवन बिता जाओगी।
पर फिर भी कभी कोई अहमियत नहीं पाओगी।

यह सच्चाई है स्त्री जीवन की,
जो हर स्त्री ने बताई है।
इतना सब कुछ सहने पर भी,
कभी उसके मुंह से उफ तक ना आई है।
और पूजते हैं लोग देवी की मूर्तियां बनाकर,
ना जाने कब समझेंगे ये नासमझ के ये स्त्री है,
उनके घर देवी रूप में आई है।

(अदिति विश्वकर्मा)
B.A.,L.L.B. (5th Semester)
सुपुत्री श्री संजीव विश्वकर्मा
प्रांतीय उपाध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

अंतर्द्वंद

ज्वार है उबल रहा
सवाल है जो पल रहा
न्याय की जो खोज है
क्यों खोज ही है चल रहा।

तंत्र है अशेष जो
विहीन इसकी आत्मा
न्याय के पुण्य वेदी पर
तड़प रही है साधना।

कर्म ऐसे क्यों मिले
जो धर्म-न्याय से दूर हैं
समक्ष है व्यथा सभी
तथा जमीर मूक है।

सही गलत को भूल कर
जो आदेश का पालन करे
वो दृष्टि हैं हम न्यायदूत
जो स्याह-पट देवी ढके।

सहभागिता विशेष है
हम न हो तो क्या ही शेष है
दिशा भ्रमित न प्रतिष्ठित करे
तभी सफल उद्देश्य है।

अभिप्राय है सदैव यह
अन्याय न फूले फले
न्याय की चाह जिसे
सभी को वो न्याय मिले।

संतोष और सुखद रहे
कर्म का अनुभव सदा
न्याय-धर्म के रण में
विजयी रहे न्याय सदा।

(अभिषेक श्रीवास्तव)
वरिष्ठ सहायक/सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर
जनपद न्यायालय गोरखपुर

शून्य

एक शून्य बचा हृदय में, नयनों में करुणा क्रंदन
सब सूना सा है लगता, तुम छोड़ गई मेरा जीवन।
छाया चंहुओर अंधेरा, अवसाद ने डाला डेरा
घनघोर निराशा छाई, जब स्मृति में तुम आई
मैं घूमूँ फिरता मारा, इस समय-चक्र से हारा
कोई आस रही न बाकी, यह जीवन हुआ एकाकी
एक विरह वेदना मन मे, पीड़ा की जलिधि तन में
मस्तिष्क मरुस्थल जैसा, जड़ रहा हिमगिरि जैसा
यूँ लुटा के जीवन पूँजी, जूँ खड़ा हो कोई अकिंचन।
पाने खोने की आशा, अब बदली है परिभाषा
उद्देश्य नही अब दिखता, क्या चाहूँ और क्या लिखता
मैं कलम पकडना भूला, जब स्मृति में तेरी झूला
तेरा वो रूप सलोना, अंचल अश्रु से भिगोना
वो भीगी भीगी पलकें, प्रतिबिंब न कोई झलके
सिसकती हुई वो श्वासें, जैसे कोई मुझको त्रासे
जब लेती नाम मेरा थी, होता अधरों में कम्पन।
वो ऋतुओं में सावन थी, गंगा जैसी पावन थी
तुलसी की रत्नावली सी, कबीर की दोहावली सी
हृदय में झनकार जगाती, अन्तर्मन को महकाती
वो अरुण की आभा जैसी, शशिमुख में शीतलता सी
कलकल करती वह सरिता, मधुजल जिसमे था बहता
द्वारे पे जब थी आती, अपनी आभा फैलाती
मैं मन्द मन्द मुस्काता, जड़ से हो जाता चेतन।
ऋतुओं का आना जाना, ये समय का ताना बाना
इस गाँव के सारे रस्ते, सब मुझ पर है हँसते
विक्षिप्त अवस्था मेरी, दुःख करता हर पल फेरी
ये पांव के पीले छाले, इन रस्तों पे रस डालें
ये शूल बबूल घने सब, हैं पांव के गहने ये अब
बीता संग वो हर क्षण, वो करता मुझसे है रण
सब नष्ट नष्ट करने को, आ लौटा बन के प्रभंजन।
जब मन्द मारुत है आए, तेरा आभास कराए
कलिका है जब खिलती, तुम निकट यहीं हो मिलती
ये मेरी भीगी पलकें, तेरी छवि इसमे झलके
तेरे वो पत्र महकते, हैं चिता सम दहकते
उनकी गर्मी का किनारा, है देता मुझको सहारा
तुम रहती यहीं कहीं पर, मेरी वेदना शिखर पर
तुम निकट कहीं रही रम, अब भी रहता है ये भ्रम।
जब उन्मादी हो जाऊं, गीतों में तुमको गाऊं
देना मुझको यह सम्बल, मैं बनूं सदा इक निश्छल
तेरी ही किसी स्मृति में, तेरे मुख की आकृति में
मै करूँ आराधना तेरी, पावन बनें भावना मेरी
पर स्पर्श से हूँ न विचलित, अपने भावों से कल्पित
तुम्हें रखूँ मन मन्दिर में, स्व हृदय के इस अंतर में
अभिलाषा मात्र यही है, हो जाए यह मन व्रन्दावन।
जब काल ग्रसने आए, मुस्काता मुझको पाए
सब त्याग चलूं मैं अर्जित, तनिक दिखूं न विचलित
उस अनन्त यात्रा पग में, जीवन की अंतिम डग में
तुम विदा मुझे कर देना, कर हृदय पर रख लेना
कोई अश्रु न नीचे आए, कोई सिसकी न सकुचाए
तब मुक्त मुझे यूँ करना, नयनों गंगाजल भरना
हो जाऊँगा प्रफुल्लित, आनन्दित हो अन्तर्मन।

(अमित मिश्रा 'केवल')
सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर
जनपद न्यायालय, लखनऊ

ज़रूरत है

तूफानों से टकराने को, हौंसले की ज़रूरत है
जेहन ओ दिल में उफनते, जलजले की ज़रूरत है।
नजदीकियाँ भी सबब हैं, वहम होने का दरम्यां
कशिश बनाये रखने को, फासले की ज़रूरत है।
मुश्किल नहीं मोहब्बत में, हासिल करने को कुछ
मुनासिब वक्त पर सही, सिलसिले की ज़रूरत है।
टूटी कश्ती से भी यलगार, मुमकिन है समन्दर से
दिल में जुनून और एक, फैसले की ज़रूरत है।
चिंगारी बन जाये शोला, हैरत की बात नहीं
भड़कने को हवाओं के, काफिले की ज़रूरत है।

(योगेश कुमार शर्मा)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, मथुरा

कामयाबी

परेशानियों से भागना आसान होता है,
हर मुश्किल जिन्दगी में एक इम्तिहान होता है,
हिम्मत हारने वाले को कुछ नहीं मिलता जिंदगी में
और मुश्किलों से लड़ने वाले के कदमों में ही तो जहाँ होता है।

वो जो शोर मचाते हैं भीड़ में
भीड़ ही बनकर रह जाते हैं,
वही पाते हैं जिंदगी में कामयाबी
जो खामोशी से अपना काम कर जाते हैं।

(अमरेश कुमार पटेल)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, कुशीनगर (पडरौना)

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ

(सौरभ श्रीवास्तव)

वरिष्ठ सहायक

जनपद न्यायालय, कासगंज

सम्बद्धः मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

एक ऐसा शब्द जो आज हर किसी के जुबान पर है पर कभी हम में से अधिकतर लोग इससे अनजान थे, तो निश्चित ही कुछ ऐसा हुआ होगा जिसकी वजह से हमारा संघ इतना चर्चित हुआ है जी हाँ इसका मुख्य कारण हमारे संघ पदाधिकारियों की लगन, मेहनत और जुनून है जिसके बल पर संघ को इतनी ताकत मिली हैं आज जो हम उपलब्धि और नाम हासिल कर पाए हैं वे अपने आप में लाजवाब और अदभुत है। कर्मचारी संगठन का बहुत ही बड़ा महत्व होता है।

अकेला मनुष्य शक्तिहीन है, जबकि संगठित होने पर उसमें शक्ति आ जाती है। संगठन की शक्ति से मनुष्य बड़े-बड़े कार्य भी आसानी से कर सकता है। संगठन में ही मनुष्य की सभी समस्याओं का हल है। जो परिवार और समाज संगठित होता है वहां हमेशा खुशियां और शांति बनी रहती है और ऐसा देश तरक्की के नित नए सोपान तय करता है। इसके विपरीत जो परिवार और समाज असंगठित होता है वहां आए दिन किसी न किसी बात पर कलह होती रहती है जिससे वहां हमेशा अशांति का माहौल बना रखता है।

संगठित परिवार, समाज और देश का कोई भी दुश्मन कुछ नहीं बिगाड़ सकता, जबकि असंगठित होने पर दुश्मन जब चाहे आप पर हावी हो सकता है। संगठन का प्रत्येक क्षेत्र में विशेष महत्व होता है, जबकि बिखराव किसी भी क्षेत्र में अच्छा नहीं होता है। संगठन का मार्ग ही मनुष्य की विजय का मार्ग है। संगठन में प्रत्येक व्यक्ति का विशेष महत्व होता है इसलिए जब मनुष्य संगठित होकर कोई कार्य करता है तो उसके परिणाम में विविधता देखने को मिलती है। जिस तरह प्रत्येक फूल अपनी-अपनी विशेषता और विविधता से किसी बगीचे को सुंदर व आकर्षित बना देते हैं उसी तरह मनुष्य भी अपनी-अपनी विशेषता और योग्यता से किसी भी कार्य को नया आयाम प्रदान कर सकता है, संगठन में प्रत्येक मनुष्य को अपनी व्यक्तिगत भावनाओं पर नियंत्रण करना होता है। इसलिए संगठन में व्यक्ति को शारीरिक तौर पर ही नहीं, बल्कि मानसिक व बौद्धिक रूप से भी समर्पित होना पड़ता है।

"इल्म"

(आशुतोष झा)
जिला एवं सत्र न्यायालय
शामली

अलग क्यों मानते हैं
क्यों सब तरफ लकीरें खींच दी हैं
तान दिए इमारतों के शामियाने
बैठा दिया संतरी लेकर बंदूक
क्यों किया यह सब क्या है इसकी तस्दीक

ये पानी की लकीरें मिट जाती हैं चंद तेज अंगड़ाईयों से
कहाँ जाती हैं ये सरहदें ये तार ये दीवार
जब धरा खुद ही उन्हें बिखेरती है

अमन रंग से तर मुस्कराता मिला यह जीवन
क्यों भींच दिया सुरम्य यह वसन अपनी दरदरी सोच में

की लगा कि सब खून के छींटें धुल जायेंगे गंगा के आँचल तले
और सारे काले पदचिन्ह हो जायेंगे धुंधले काबा की राहों में गर चले
की शायद हिमालय की बर्फ ठंडा कर देगी गर्म दुश्मनी के हौसले
और लंगर की प्रसादा मिटा देगी धधकती भूख..
मानो गिरजा की हर प्रार्थना से नही होगी अब कोई चूक....

मुस्करा कर रो लेंगे मजार पर कि मेरे मजार पर भीड़ हो
बनवा देंगे नाम से एक मंदिर की अच्छा जान मेरे नाम की भी प्रार्थना तामीर हो

बन ही जायेगा सख्त पत्थर का एक पुतला
दुनिया कह सकेगी ये बंदा था बेहद दूध का धुला

हर ताल हर घाट पर पानी पी लिया
पर पानी का पीना भय था मौत का लिया

बाहर के सारे उसूल हैं पाजेब मजहबी खांचों के...
बांध के चल क्या कोई सका है गठरी जिंदा लाशों के...

फकत जखीरा है एक झूठ का यारों
कौन कहाँ पहुँचता तुम किसे भी पुकारो

खुद का इल्म ही खुदा है ..
नहीं कभी वह रहा जुदा है ...

न्यायपालिका में तकनीक का उपयोग

कोविड-19 ने हमें डिजिटिलाइजेशन, अदालतों के कागज मुक्त प्रारूप और वीडियो कान्फ्रेंस का महत्व समझाया और इन प्रौद्योगिकी को अपनाने से अदालत के बेहतर प्रबंधन के साथ ही प्रभावी और कम लागत में फैसले होंगे। तकनीकी के उच्चतम विकास एवं डिजिटलाइजेशन के युग के अनुसार न्यायिक प्रणाली में भी बदलाव करने की जरूरत है। न्यायिक प्रशासन में हर स्तर पर ऑनलाइन सिस्टम विकसित करने के साथ ही न्यायाधीशों, न्यायिक अधिकारियों एवम् न्यायिक कर्मचारियों को डिजिटल तकनीक और इंटरनेट के विभिन्न आयामों का अधिकाधिक उपयोग करने की प्राथमिकता देनी चाहिए। न्यायपालिका में पेपरलेस के साथ पिपुललेस कार्यवाही की आवश्यकता है। इसके लिए इलेक्ट्रोनिक, इंटरनेट एवं डिजिटलाइजेशन की आधुनिक तकनीक को अधिकाधिक रूप में अपनाना जरूरी हो गया है। न्यायालय के कर्मचारियों पर अत्याधिक फाइलों का बोझ, फाइलों के रख रखाव की जिम्मेदारी, फाइलों का भौतिक सत्यापन यह कर्मचारियों को लिए बहुत बड़ी समस्या है, डिजिटल रिकार्ड्स होने से न्यायालय कर्मी फाइलों के रख रखाव से चिंता मुक्त हो जाएंगे और न्यायिक प्रकिया भी डिजिटल होने से समस्त न्यायिक कार्य सुगमता से होने लगेगा। देश मे अभी भी काफी सालों से देश और राज्य की अलग-अलग न्यायालयों में अत्यधिक मामले लंबित चल रहे, पुराने मामलों की फाइलो का रख रखाव भी अत्यंत गंभीर समस्या है, अतः लंबित मामलों और अन्य समस्याओं के समाधान के लिये ई-कोर्ट के रूप में तकनीक का उपयोग किया जा रहा है।

ई-कोर्ट परियोजना

ई-कोर्ट परियोजना की परिकल्पना 'भारतीय न्यायपालिका में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के कार्यान्वयन के लिये राष्ट्रीय नीति एवं कार्ययोजना- 2005' के आधार पर की गई थी। ई-कोर्ट मिशन मोड प्रोजेक्ट (e-Courts Mission Mode Project), एक पैन-इंडिया प्रोजेक्ट (Pan-India Project) है, जिसकी निगरानी और वित्त पोषण देश भर में जिला न्यायालयों के लिये न्याय विभाग, कानून एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा की जाती है।

ई-कोर्ट परियोजना का प्रस्तावित चरण III पृष्ठभूमि

भारत के सर्वोच्च न्यायालय की ई-समिति ने हाल ही में ई-कोर्ट परियोजना के तीसरे चरण के लिये अपना मसौदा विजन दस्तावेज जारी किया। चरण I और II में न्यायपालिका के डिजिटलीकरण यानी ई-फाइलिंग, ऑनलाइन मामलों पर नजर रखने, निर्णयों को ऑनलाइन अपलोड करने आदि कार्यों का क्रियान्वयन किया

गया था। इससे न्याय के वितरण की प्रक्रिया आसान बनाने में मदद मिली है। गुणात्मक एवं मात्रात्मक न्यायिक परिणामों में वृद्धि के लिये न्याय प्रणाली को सस्ता, सुलभ, लागत प्रभावी, पूर्वानुमेय, विश्वसनीय तथा पारदर्शी बनाना। देश की सबसे पुरानी अदालतों में से एक इलाहाबाद उच्च न्यायालय, अपने मामले के रिकार्ड और इसकी फाइलों के प्रबंधन के डिजिटलीकरण का कार्य कर रहा है। दिल्ली सरकार ने भी हाल ही में जिला अदालतों के रिकार्ड का डिजिटाइजेशन करने के लिये छह करोड़ रूपए मंजूर किए हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने भी हाल ही में जिला अदालतों के रिकार्ड का डिजिटाइजेशन करने के लिये 70 करोड़ रूपए मंजूर किए हैं।

आज का युग डिजिटल क्रांति का युग है, न्यायपालिका में भी इसकी उपयोगिता और आवश्यक्ता है, डिजिटलीकरण से न्यायालय के साथ साथ न्यायिक अधिकारियों एवम कर्मचारियों को भी कार्य मे तत्परता और सुगमता होगी। मा० उच्च न्यायालय के साथ साथ अधीनस्थ न्यायालयों में भी फाइलों का डिजिटल रख रखाव शुरू हो जाने से कर्मचारियो को मानसिक और शारीरिक दोनों तरह से आराम के साथ साथ काम मे सुगमता और तत्परता भी आएगी, अत्यधिक फाइलों का बोझ भी कम होगा तथा भविष्य में केस की सुनवाई हेतु भौतिक रूप से फाइलों का स्थानांतरण भी नहीं करना होगा। सभी रिकार्ड और फाइलस कंप्यूटर में डिजिटल रूप में सुरक्षित रहेंगी।

डिजिटल क्रांति के युग मे जहाँ न्यायालय के कार्यों के डिजिटिलाइजेशन एवं फाइलो के रख रखाव को डिजिटल माध्यम से करने पर जोर है उसके साथ साथ न्यायालय कर्मियों से संबंधित सूचना भी ऑनलाइन वेब पोर्टल के माध्यम से डिजिटल रूप में करने की भी प्रकिया चल रही है जिससे कर्मचारीगण के सारे रिकार्ड्स भी ऑनलाइन पोर्टल पर हो जाये व सारी सूचना पारदर्शी एवं समय से निस्तारित हो सके। भविष्य डिजिटल क्रांति का है और हम सबको डिजिटल भारत बनने में और सुचारू एवम विश्वसनीय तथा पारदर्शी न्यायपालिका के कार्य मे सहयोग करने के लिए डिजिटल और डिजिटिलाइजेशन को बढ़ावा देना चाहिए।

(वसीम अहमद)

वरिष्ठ सहायक

जनपद न्यायालय, हमीरपुर

सम्बद्धः माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

... तो नहीं आया

तेरा यशगान या अपनी पहचान मिटाने तो नहीं आया,
मैं तेरे दर पे अपना सर झुकाने तो नहीं आया,
विदित है दूर रहना है तेरे हर ख्वाब का मकसद,
मैं तेरे ख्वाब को खुद पर लुटाने तो नहीं आया।

किताबें हैं खुली अब भी, सवालों के जवाबो में,
मैं उनके हर्फ को खुद से मिटाने तो नहीं आया,
बेहतर है करो अब तुम बात तोहमत की,
मैं खुद को तेरे फाके से बचाने तो नहीं आया।

तुझे पाना नहीं हसरत, न हसरत कुछ और पाने की,
मैं तुझपे अपना हक जताने तो नहीं आया।
मैं लौटा हूं तो उसमें भी अभी कुछ बात है "अनपढ़"
मगर वो बात मैं तुझसे बताने तो नहीं आया।

(नितेश कुमार 'अनपढ़')
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, बाराबंकी

समय

समय नहीं चिल्लाते रह गये,
समय समय पे गवां दिया !
सुबह उठे तो समय समय ही,
शाम हुई सब गवां दिया !
रात हुई तो अगला दिन था,
वो भी हमने गवां दिया !
समय नहीं चिल्लाते रह गये,
समय समय में समा गया!

(रंजीत कुमार)
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, बरेली

कलम अब तू मत बोल

(अभिव्यक्ति की अजादी में आने वाली बाधाओं को उजागर करता 'कलम' और अभिव्यक्तिकर्ता के बीच का संवाद)

बहुत चलाये बाण व्यंग के बहुत किया सबको विभोर,
कभी मन को भेदा किसी के, किसी के चित्त को दिया झकझोर,
कलम अब तू मत बोल,

कहती है वो कागज तुझसे जिसपर लिख रहा था तू डोल
नहीं धर्म था कोई मेरा, नहीं जाति थी कोई विशेष
जब तक थी मैं कोरा कागज प्रिय सबको था मेरा भेष,

लेकिन जब से मेरे तन पर अपने भावों को दिया उकेर
कोई संजोता इतिहास बनाकर कोई देता है मुझे अब फेंक
कलम अब तू मत बोल,

कहती हैं अब तुझसे उंगलियाँ, जो थामे रहती थीं पुरजोर,
तू तो निष्ठुर निर्जीव भाव है, नहीं दिखाता तुझसे कोई जोर,
कोई काटता कोई तोड़ता कोई देता मुझे अब मोड़,
कलम अब तू मत बोल,

कभी लिखा इतिहास किसी का कभी लिखा मैनें विद्रोह
कभी ब्रिटिशों को ललकारा कभी किसी के खोले पोल,

नहीं कबूल ये स्वभाव मेरा नहीं पसंद तुझको विद्रोह
लेकिन न बँध सकता मैं भी किसी का बनकर दास विशेष
बेशक डर है तुझको मुझसे नहीं बल अब तुझमें कोई शेष,

स्वयं तोड़ देते नोख हमारी बना देते मुझको अवशेष
किन्तु ये न कहते मुझसे
कलम अब तू मत बोल
कलम अब तू मत बोल।।

(विवेक कुमार)
प्रधान सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, अमेठी
सम्बद्ध : मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
सदस्य (सम्पादकीय समिति)
"उद्घोष" त्रैमासिक ई-पत्रिका

उम्मीद

विपिन कुमार मौर्य
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, जालौन

खेत में फसल बोने के बाद,
किसान को अधिक उपज की उम्मीद।
खेत में अपनी सूखी फसल को देख कर,
किसान को वर्षा की उम्मीद।
परीक्षा देने के बाद विद्यार्थी को,
अच्छे परिणाम की उम्मीद,
नौकरी का इंटरव्यू देने के बाद,
एक बेरोजगार को चयन की उम्मीद।
एक भिखारी को भीख मांगने से पहले,
अधिक मदद मिलने की उम्मीद,
एक अनाथ को इस दुनिया में कभी,
एक घर मिलने की उम्मीद।
एक मुसाफिर को सफर शुरू करने से पहले,
मंजिल पर समय से पहुंचने की उम्मीद,
किसी का इंतजार करने वाले को,
उसके समय पर पहुंचने की उम्मीद।
किसी को अपने सबसे अनमोल, प्रिय, प्यारे से,
पहली बार मिलने की उम्मीद,
कभी - कभी ये सब उम्मीदें पूरी होती हैं,
कभी उम्मीदें बस उम्मीद ही रह जाती है।

''बीता बचपन''

(योगेश कुमार 'योगी')
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बदायूं

बैठे-बैठे यूँ बचपन की याद आ गयी
आँखों के सामने दादी की कहानी आ गयी
याद आया वो दादा की टांगो का झुला
जिस पर मैं खूब था झुला
वो पापा की डाँट मम्मी का प्यार
चाचा का चिढ़ाना बुआ का दुलार
वो नानी का आना और मेरा जोर से चिल्लाना
मम्मी! नानी आ गयी, नानी आ गयी।

कभी पापा मुझे रूलाते थे,
तो दादा मुझे हँसाते थे।
दादी भी थी साथ खेलती
और दादा हमें खिलाते थे।

एक रुपये की चीज है खानी मम्मी से जब कहता था
बेटा कह दो पापा से यही हमेशा सुनता था
पर दादा का कुर्ता पकड़ कर
जब भी उनको खींचा था
उठा गोद में लेते मुझको
मैं हाथ खड़े कर देता था
समझ इशारा, वो मुझको लेकर दुकान पर जाते थे
जो भी चाहे लेले तू वो कभी नहीं इतराते थे।

न जाने कब बीते वो दिन
अब याद बहुत ही आते हैं।
नहीं कहीं दादा का रुपय्या
दादी का भी प्यार नहीं।
अब बीत चुका है वो बचपन
अब जीने में वो बात नहीं।

एक पत्र- कचेहरी की नौकरी के नाम

(असित कुमार)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बलरामपुर

जब हमने नौकरी ज्वाइन की तो लोगों ने तो खूब सराहा, मगर हमारे अपने कचेहरी के भाई लोगों ने कहा, यहाँ क्यों आ गये? सबसे खराब यही नौकरी है। तब हमने कहा, साहब हम लोगों ने बड़ी मेहनत की तब जाकर यह नौकरी मिली है, अब आप लोग छोड़ने का परामर्श दे रहे हैं। ये नौकरी हमारा भविष्य है। फिर भी कचेहरी के भाई लोगों ने कहा कि ये नौकरी बहुत खराब है, दूसरी कोई भी नौकरी कर लो, मगर ये बहुत खराब है। अब मैं उन भाईयों से एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि जब इतनी खराब है तो आप क्यों कर रहे हो, आपने क्यों न छोड़ी? लोग अपनी रोजी की कसम खाते हैं मगर ये नहीं कहते कि ये नौकरी बहुत खराब है। अरे भाई लोग नौकरी का मतलब ही नौ-कर्म अर्थात् आपको सभी कार्य (जो जिस पद पर आप हों) करने होंगे। कुछ लोग कहते हैं कि आप सरकारी नौकरी में हो, बहुत भाग्यशाली हो।

अतः आप सबको मैं यही कहूँगा कि ईमानदारी से अपनी नौकरी कीजिए। केवल नौकरी ही मत कीजिए, नौकरी को मजे से कीजिए। किसी भी नौकरी में आप रहोगे तो परेशानियाँ तो आएँगी ही, उसका डटकर सामना कीजिए। मगर नौकरी को मत कोसिए कि "कचेहरी की नौकरी सबसे खराब है" क्योंकि ये नौकरी ही आपके परिवार का पालन-पोषण कर रही है।

रोटी

चेहरों पर उभरी, चिंता की रेखाएं
कहती हैं आदमी के संघर्ष की गाथाएं
रोटियों को पाने की ललक में
ठहर जाता है वक्त।
इज्जत के पानी और स्वाभिमान के आटे से गूँथी,
तनिक भी,
आँच बर्दाश्त नहीं करती ये रोटियाँ
लेकिन, आसानी से ठहर जाती हैं अपने 'आब' में
आग में राग है तो रोटियाँ खिल जाती हैं
जीवन के संघर्ष में
पीठ और पेट के श्रम के निष्कर्ष से
जब सत्य से सामना होता है
भूख का,
चिंगारी फेंकने लगती है आँखें
तब कहीं रोटियाँ मिल पाती हैं

(डॉ० कुमार विनोद)
प्रशासनिक कार्यालय
जिला एवं सत्र न्यायालय, बलिया

बुलंद हौसलों की कहानी

(दिग्विजय सिंह)

वरिष्ठ सहायक

जनपद न्यायालय, कासगंज

सम्बद्ध: मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

कचहरी के काम में अक्सर आप लोगों ने अधिकतर लोगों को परेशान होते हुए देखा होगा। पर आज मैं आप लोगों को एक कहानी के माध्यम से ये बताना चाहता हूँ कि हमें मुसीबतों से परेशान नहीं होना है बल्कि डट कर सामना करना है। बाकी संघ तो हमारे साथ हमेशा खड़ा है। ये कहानी है विश्व प्रसिद्ध नेपोलियन की। नेपोलियन अक्सर जोखिम भरे काम किया करते थे। एक बार उन्होने आल्प्स पर्वत को पार करने का ऐलान किया और अपनी सेना के साथ चल पड़े। सामने एक विशाल और गगनचुम्बी पहाड़ खड़ा था जिसपर चढ़ाई करना असंभव था। उनकी सेना में अचानक हलचल की स्थिति पैदा हो गई। फिर भी उन्होने अपनी सेना को चढ़ाई का आदेश दिया। पास में ही एक बुजुर्ग औरत खड़ी थी। उसने जैसे ही यह सुना वो उनके पास आकर बोली कि क्यों मरना चाहते हो। यहाँ जितने भी लोग आये हैं, वो मुँह की खाकर यही रह गये। अगर अपनी जिंदगी से प्यार है तो वापिस चले जाओ। उस औरत की यह बात सुनकर नेपोलियन नाराज होने की बजाय प्रेरित हो गया और झट से हीरो का हार उतारकर उस बुजुर्ग महिला को पहना दिया और फिर बोले आपने मेरा उत्साह दोगुना कर दिया और मुझे प्रेरित किया है। लेकिन अगर मै जिंदा बचा तो आप मेरी जय-जयकार करना। उस औरत ने नेपोलियन की बात सुनकर कहा- तुम पहले इंसान हो जो मेरी बात सुनकर हताश और निराश नहीं हुए। 'जो करने या मरने' और मुसीबतों का सामना करने का इरादा रखते हैं, वह लोग कभी नहीं हारते।

आज सचिन तेन्दुलकर को इसलिए क्रिकेट का भगवान कहा जाता है क्योकि उन्होने जरूरत के समय ही अपना शानदार खेल दिखाया और भारतीय टीम को मुसीबतों से उभारा। ऐसा नहीं है कि यह मुसीबतें हम जैसे लोगों के सामने ही आती हैं, भगवान राम के सामने भी मुसीबतें आयी हैं। विवाह के बाद, वनवास की मुसीबत। उन्होने सभी मुसीबतों का सामना आदर्श तरीके से किया। तभी वो मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाये जाते हैं। मुसीबतें ही हमें आदर्श बनाती हैं।

अंत मे एक बात हमेशा याद रखियेगा,

जिंदगी में मुसीबतें चाय के कप में जमी मलाई की तरह है,
और कामयाब वो लोग हैं जिन्हे फूँक मार के मलाई को साइड कर चाय पीना आता है।

"आगे बढ़ो..."

(सूरज गुप्ता)
वाद लिपिक
जनपद न्यायालय, गोरखपुर

कल का दिन किसने देखा है,
आज अभी की बात करो।
ओछी सोचों को त्यागो मन से,
सत्य को आत्मसात करो।

जिन घड़ियों में हंस सकते हैं,
क्यों तड़पें संताप करें।
सुख-दुःख तो है आना-जाना,
कष्टों में क्यों विलाप करें।

जीवन के दृष्टिकोणों को,
आज नया आयाम मिले।
सोच सकारात्मक हो तो,
मन को पूर्ण विराम मिले

हिम्मत कभी न हारो मन की,
स्वयं पर अटूट विश्वास रखो।

मंजिल खुद पहुंचेगी तुम तक,
मन में सोच कुछ खास रखो।

सोच हमारी सही दिशा पर,
संकल्पों का संग रथ हो।
दृढ़ निश्चय कर लक्ष्य को भेदो,
चाहे कितना कठिन पथ हो।

जीवन में ऐसे उछलो कि,
आसमान को छेद सको।
मन की गहराई में डुबो तो,
अंतरतम को भेद सको।

इतना फैलो कायनात में,
जैसे सूरज की रोशनाई हो।
इतने मधुर बनो जीवन में,
हर दिल की शहनाई हो।

जैसी सोच रखोगे मन में,
वैसा ही वापस पाओगे।
पर उपकार को जीवन दोगे,
तुम ईश्वर बन जाओगे।

तुम ऊर्जा के शक्ति पुंज हो,
अपनी शक्ति को पहचानो।
सद्भावों को उत्सर्जित कर,
सबको तुम अपना मानो

सेवानिवृत्त जिंदगी (Retired Life)

रिटायर्ड आदमी को,
सब फालतू समझते हैं।
वे छोटी छोटी बातों में,
बार बार बमकते हैं।
बात करो तो,
अपनी ही हाँकते हैं।
मैंने ये किया, वो किया,
यही फांकते हैं!

पत्नी कहती है,
दिन भर कुर्सी तोड़ते हो।
मोबाइल में आंखे फोड़ते हो,
जाओ बाजार से,
कुछ सामान ही ले आओ!

बहु कहती है....
मुन्ना रो रहा है,
उसे घुमाने ले जाओ।
चाय बनाने में भी,
वह शर्त लगाती है।
मुन्ना को घुमा लाऊँ,
तब चाय पिलाती है!

रिटायर क्या हुआ,
जैसे मेरी सरकार ही गिर गई।
सात जन्मों की साथी पत्नी भी,
रूलिंग पार्टी से मिल गई!

टीवी देखता हूँ,
तो बच्चे रिमोट छीन लेते हैं।
कार्टून चौनल देख कर,
आस्था लगा देते है!
हम आस्था लायक हैं,
ये कैसे जान लेते हैं?
एक पैर कब्र में गया,
ये कैसे मान लेते हैं?

लेडीज जिमनास्टिक्स देखता हूँ,
तो लोग मुझे देखते हैं।
जैसे कहते हों, बूढ़े हो गये,
मगर अब भी आँखें सेकते हैं।

एक दिन नाती पूछ रहा था,
दादाजी, आज पेपर में,
कितने एड आये हैं?
मेरी अनभिज्ञता पर बोला
मम्मी तो कहती है,
आप पेपर चाट जाते हैं।
इतना भी नहीं मालूम,
तो सिर क्यों खपाते हैं?
योगा करता हूँ तो कहते हैं।
मरने से ऐसे डरते हैं।
जैसे दुनियाँ में कभी,
किसी के बाप नहीं मरते हैं!

मैं कहता हूँ अरे भाई,
अभी रिटायर हुआ हूँ,
कुछ पेंशन तो खाने दो।
बेटा कहता है
मूलधन तो ले ही लिया,
अब ब्याज को जाने दो!

सोचता हूँ,
रिटायरमेन्ट के बाद,
ऐसा क्या हो जाता है?
आफिस का बॉस,
घर में जगह नहीं पाता है!

उसकी सलाह मशविरा,
निरर्थक हो जाती हैं।
उसके बोलने पर,
क्यों घर वाले झल्लाते हैं?
चाहता हूँ कहूँ,
घर का मुखिया न रहा,न सही,
एक सम्मानित सदस्य,
तो बने रहने दो

न सुनना हो मत सुनो,
मगर बात तो कहने दो।
बोलने की आदत है,
धीरे धीरे छूटेगी।
स्वयं को सब कुछ,
समझने की धारणा,
धीरे धीरे टूटेगी!

कुछ समय के बाद मैं भी,
बालकनी में बैठा चुपचाप,
सड़क की ओर देखूंगा।
आती जाती भीड़ में,
वे कुछ चेहरे खोजूंगा।
जो मुझे,
फालतू बैठा देखकर भी,
फालतू न समझें।
हमेशा टें टें करने वाला,
पालतू न समझें!

(मिथुन कुमार सोनकर)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, फैजाबाद
सम्बद्ध : मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

सभी आदरणीय सेवानिवृत्त साथियों को समर्पित

उड़ान

हौसलों की उड़ान अभी बाकी है,
मंजिल का मकाम अभी बाकी है।
सूरज की तेज चमक न सही,
पर किरणों का सलाम अभी बाकी है।
मिट गईं यादें सैलाब के साथ,
पर कहीं तो पैरों के निशां अभी बाकी है।
ऊँची उड़ान का खिताब न सही,
पर आसमाँ में उड़ने का अरमान अभी बाकी है।
कुछ करने की चाह ही तो है,
तभी तो मुर्दे में जान अभी बाकी है।
हौसलों की उड़ान अभी बाकी है,
मंजिल का मकाम अभी बाकी है।

(निशा तिवारी)
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, कानपुर नगर

हजारो होगें

हजारों होंगे दुनिया में बेपनाह खूबसूरती पर मरने वाले।
हमें तो आपकी मासूमियत और सादगी ने मारा है।।
कई मिलेंगे आपको अपनी आँखों में बसाने वाले।
पर हमने तो आपको अपनी रूह में बसाया है।।

बिछाई होंगी जन्नत कइयों ने आपके कदमों के नीचे।
हमने तो आपके कदमों में अपनी पलकों को बिछाया है।।
तारे लाकर औरों की तरह हम आपको दे नहीं सकते।
पर देने को तुम्हें फूलों का एक बगीचा हमने लगाया है।।

कइयों ने तुम्हारी जिंदगी खूबसूरत बनाने का वादा किया होगा तुमसे।
पर हमारी तो जिंदगी को तुमने ही खूबसूरत बनाया है।।
न जाने किस खुशनसीब के हाथों में होगा हाथ तुम्हारा।
हमने तो बस बिना किसी उम्मीद के तुमसे अपना प्यार निभाया है।।

हम वो नहीं जो अपनी चाहत को पूरी करने के लिए कुछ भी कर जाएं।
जिसे हम चाहते हैं, हमें तो बस उसकी खुशी चाहिए।।
हर पल, हर लम्हा, हर मन्जर, बस आप मुस्कुराते रहें।
हमसे दूर रहकर अगर आप खुश हैं, तो बस हमें और क्या चाहिए।।

(सौरभ शुक्ल)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, उन्नाव

समय चला पर कैसे चला पता ही नहीं चला

जिंदगी की आपाधापी में कब निकली उम्र हमारी यारों, पता ही नहीं चला।
कंधे पर चढ़ने वाले बच्चे कब कंधे तक आ गए पता ही नहीं चला।
किराए के घर से शुरू हुआ था सफर अपना, कब अपने घर तक आ गए पता ही नहीं चला।
साइकिल के पैडल मारते हुए हांफते थे उस वक्त, कब से हम कारों में घूमने लगे पता ही नहीं चला।
कभी थे जिम्मेदार हम मां बाप के, कब बच्चों के लिए हुए हम जिम्मेदार पता ही नहीं चला।
एक दौर था जब दिन में भी बेखबर सो जाते थे, कब रातों की नींद उड़ गई पता ही नहीं चला।
जिन काले घने बालों पर इतराते थे कभी हम, कब सफेद होना शुरू हो गए पता ही नहीं चला।
दर दर भटकते थे नौकरी की खातिर, कब रिटायर हो गए समय का पता ही नहीं चला।
बच्चों के लिए कमाने बचाने में इतना मशरुफ हुए, कब बच्चे हमसे हो गए दूर पता ही नहीं चला।
भरे पूरे परिवार से सीना चौड़ा रखे थे हम, अपने भाई बहनों पर गुमान था उन सबका साथ छूट गया, कब अपना परिवार हम दोनों पर सिमट गया पता ही नहीं चला।
सोच रहे थे अपने लिए भी कुछ करें, कब शरीर ने साथ देना बंद कर दिया पता ही नहीं चला ।
समय चला पर कैसे चला पता ही नहीं चला।।

(आशुतोष कटियार)
वरिष्ठ लिपिक
रेलवे कोर्ट, फर्रूखाबाद

आप अकेले ऊपर उठ रहे हो तो
नीचे गिराने को भीड़ उमड़ पड़ेगी
अगर चैन से जी रहे हो तो तुम्हें
बेचैन करने को भीड़ उमड़ पड़ेगी

शान्ति से बसर हो रहा हो तुम्हारा
आग में झोंकने को भीड़ उमड़ पड़ेगी
तुम्हारे कदम बढ़ रहे हो आगे तो
पीछे खींचने को भीड़ उमड़ पड़ेगी

सुख की नींद ले रहे हो अगर तुम तो
सपने तोड़ने को भीड़ उमड़ पड़ेगी
प्रेम बांट रहे हो अगर तुम किसी को
नफरत बांटने को भीड़ उमड़ पड़ेगी

अकेले ही यादों में खोये हुए हो तो
गुम शुदा करने को भीड़ उमड़ पड़ेगी

आत्म-सम्मान की जद्दोजहद

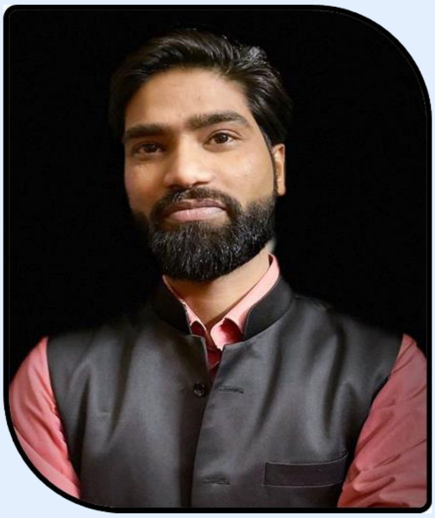

(विनीत मिश्र)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बाराबंकी

एक ख्वाब था बचपन में हसीन सा..
डाक्टर इंजीनियर पायलट बनना लगता सबको अजीज था..
दोस्ती क्लास बंक पार्टीज सब बीत गया साथ में..
क्योंकि लगता था करियर तो है ही अपने हाथ में..
क्या पता था कि लड़ाई होगी बहुत मुश्किल..
मर मर के जियेंगे जहाँ हर रोज हर दिन..
न नौकरी मिली न आत्म–सम्मान न ही खुद की पहचान..
किताबें लिए हाथ में बस रटते रहे दुनिया भर का ज्ञान..
पापा के कंधे पर कब तक रखे सर समझ नहीं आता..
कैसे समझाए उन्हें कि इस किस्मत से और लड़ा नहीं जाता..
सीट्स वैकेंसीज के नाम पर तो हजारों होती हैं शर्तें..
कभी आरक्षण तो कही भ्रष्टाचार छीन लेती है उम्मीदें..
थक गया हूँ खुद से बस दिल करता है कहीं दूर चला जाऊँ..
जहाँ मेहनत के नाम पर खुद का कमा तो पाऊँ..
जिंदगी के इस दौर में ये तो समझ गये हम..
अपनी ही कमाई के लिए आखिर कितना और सहे गम..
सच ही है वो बचपन था बहुत मासूम..
मिलेंगे काँटें हर कदम जहाँ हमें नहीं था मालूम..
क्योंकि सफलता के इस दौर में तो कई गये जान से..
काश कोई तो समझे हमें काबिल उस सम्मान के..

किताबें: एक संजोग, आरम्भ से अंत तक

जब जन्म हुआ इस धरा पे, तुझसे मेरा नाम मिला..
जब जुड़ें कदम पग-पग करके, धरा से सूरज चाँद दिखा।
क्या पता मुझे इन पन्नों की, नावों में बहकर डूबा कौन..
प्रथम चरण की बेला में, तुम्हें देखकर रह गया था मौन।
नहीं पता था मेरी किलकारी, भी है तेरा ही स्वर..
बन गया वही कागज आज मेरी जिज्ञासा का अक्षर।
क्या पता था कहां खिलेगा, इन नयनो का आभासी विकिरण..
तभी कदम-कदम मार्गदर्शक बनकर, आयी तुम मेरे संग हर रण।
एक पल क्या, हर पल था, तुम्हें मेरा उत्कर्ष निभाना..
लेकिन नियति से हर कोई, पहले क्यूँ होता है अनजाना।
थी वो मेरी भूल कभी, जब मोतियों को कैदी मानकर भागा था..
क्यूंकि प्रकृति की बनावट में, परिवर्तन से अनजाना था।
खाकर ठोकर हर पथ पर, जब-जब मैं रोया तुम संग..
बस एक तुम ही थी, जिसने दोबारा से उकेरे खुशियों के रंग।
आज दशा चातक सी मेरी, एक पल नैन हटाउं ना..
क्यूंकि एक दिन तुम संग ही, मेरा विश्व पताका लहरायेगा।
कहकर कितना, आशा देकर भी, सभी पराए बन गए लोग..
बिना कुछ कहकर भी तुम, आज भी संबंधों संग बनी अटूट।
क्या लिया आज तक कभी, तुमने मुझसे स्वार्थवश कोई लाभ..
मै अज्ञानी रहकर भी तुम संग, आज विजित हूं सारे काम।।

(अभिषेक प्रताप सिंह)
सेशन कर्लक
जिला एवं सत्र न्यायालय, एटा

तुझे जीतना है धैर्य रख

तुझे जीतना है धैर्य रख,
है प्रबल तू,
है प्रचण्ड तू,
इस बात का तू गर्व रख,
तुझे जीतना है धैर्य रख।
भाग्य को क्यों तू कोसता,
जग है तुझको देखता,
ढूँढकर तू लक्ष्य को,
तीर अब तू चला,
वीर अब तू कदम बढ़ा,
लक्ष्य तुझको है पुकारता,
दृढ़ संकल्प तू रख,
तुझे जीतना है धैर्य रख।

(शुभम जैन)
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, ललितपुर

कर्म करने से ही फल मिलता है
(कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन)

मुझे अत्यन्त खुशी है कि विगत दिनों प्रान्तीय संगठन दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ०प्र० का चुनाव बड़े ही उत्साह एवं गर्मजोशी के साथ बाराबंकी की सरजमीं पर सम्पन्न हुआ। जिस जमीं पर देवा-महादेवा जैसे तीर्थ स्थल का बहुत ही महत्व है। जिस जमीं पर दीवानी न्यायालय के प्रान्तीय संगठन का ईमानदारी व गर्मजोशी के साथ गठन हुआ। जिसमें आप लोग विजयी घोषित किये गये।

आप जैसे लोगों के विजयी होते हुए अभी ज्यादा दिन नहीं हुआ, लेकिन आप के द्वारा अस्थाई कर्मचारियों के सम्बन्ध में जो प्रयास किये गये हैं, आपके द्वारा व्यक्तिगत रूप से विधि एवं न्याय मंत्री, मा० उच्च न्यायालय इलाहाबाद मुलाकात करके एवं प्रान्तीय कर्मचारियों के हित वेतन जैसे महत्वपूर्ण कार्य हेतु रिट में पैरवी करके संगठन को बहुत ही बल मिला। भगवत गीता में कहा गया है कि "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"। अस्थाई कर्मचारियों को नियमित करने का प्रयास उक्त श्लोक में निहित है। आपके इस प्रयास का योगदान प्रत्येक जनपद की शाखाओं को और मजबूती प्रदान करता है। मार्गदर्शन प्राप्त होता है, जिससे संगठन मजबूत होता है। संगठन को आपका नेतृत्व हमेशा मिलता रहे, यही ईश्वर से कामना है।

जय संघ, जय भारत।

(केदारनाथ त्रिगुमायत)
प्रधान सहायक प्रोटोकाल
जिला एवं सत्र न्यायालय, लखनऊ

खुशी गीतों में अपनी और गम गज़लों में लिखता हूं।
मैं तो वो शेर हूं जो गजल के मतलो में दिखता हूं।।
मेरी क्या हैसियत दुनिया में ये मुझसे न तुम पूछो।
किताबों में लिखा हूं और बाजारों में बिकता हूं।।

देखकर मेरी सूरत को ना मेरा आकलन करना।
कहीं ज्यादा बुरा हूँ जितना मैं चेहरे से दिखता हूँ।।
वजूद है नहीं मेरा न कोई शक्ल है मेरी।
मैं सूनापन हूँ जो सागर के किनारों में दिखता हूँ।।

शौक है दिल की बातों को गीत गजलों में लिखने का।
नहीं शायर पुराना मैं अभी तो लिखना सिखता हूँ।।
मैं शम्मा हूँ मगर रौशन कोई होता नहीं मुझसे।
उजाला हूँ जो अक्सर रात को तारों में दिखता हूँ।।

सभी के घर में हूं पर सब मुझे करते हैं अनदेखा।
मैं हर वो सख्श हूँ जो भीड़ में भी तन्हा दिखता हूं।।
न जिंदा रहने की ख्वाहिश न मरने का मुझे डर है।
मैं वो सैनिक हूँ जो अंतिम क्षण तक टिकता हूँ।।

(प्रदीप कुमार यादव)
क्लर्क
जनपद न्यायालय, फर्रूखाबाद

लोग खुशबुओं से उनकी, शहरियत पूछते हैं
दानां परछाइयों से अपनी, काबिलियत पूछते हैं।
झोंककर मुझे दोजख़ में, तन्हा जीने के लिये
बड़ी मासूमियत से मेरी, खैरियत पूछते हैं।
अब जब तन्हाईयाँ हुई, हिस्सा मेरी जिंदगी का
वो आकर मुझसे अपनी, अहमियत पूछते हैं।
सुन के दास्तान ए दर्द मेरी, कहकहे लगाने वाले
मेरे लफ्जों की मुझसे, कैफियत पूछते हैं।
दिल तोड़कर जख्मों पर मरहम लगाने के लिए
वो नादाँ बन के इश्क की, रवायत पूछते हैं।
सितम कि बना के दीवाना, जमाने में आशिकों को
ये हुस्न वाले बीमार की, तबियत पूछते हैं।
सर झुकाया नहीं जब, रुआब में मैंने उनके
झुंझला के मुझसे वो मेरी, मालियत पूछते हैं।

योगेश कुमार शर्मा
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, मथुरा

खिड़की के पार एक लड़की

आलीशान मकान का एक आलीशान दरवाजा
जिससे हाथी भी निकल जाए
लेकिन बिन मर्जी
परिंदा भी पर न मार पाए

इतनी पाबंदी की पहले
हवा भी दस्तक दे अंदर जाने से
जाने क्या था ऐसा
जिसको रोक रहे थे लुट जाने से

पर वहां थी एक खिड़की
खिड़की के पार एक खूबसूरत लड़की
दुनिया से वह अनजान थी
न सखी न सहेली
खुशियों से न उसकी पहचान थी

मन में उसके एक आस थी
आएगा कोई ओर ले जाएगा
खिड़की से बाहर की उस
दुनिया की सैर कराएगा

वो दिन भी आया
घोड़ी चढ़ राजकुमार आया
डोली में बैठी वह मंद मंद मुस्काती है
आलीशान दरवाजा पार हुआ
नई दुनिया उसे बुलाती है

सपने नए-नए सजा रही
लाख उमंगे दिल में उठी
खुशियों से दामन भर जाएगा
अब उसको भी अपना कोई चाहेगा

बाजार हाट से होते हुए
कारवां पिया देश को जा रहा
सामने आलीशान दरवाजा है खुला हुआ
अरे ...कारवां अंदर क्यों जा रहा ?

दिल मेरा बैठा जाता हैं
बोल न फूटे
पर दर्द सहा न जाता है

मैं तो ये सब पीछे छोड़ चुकी थी
रुक जा कहार .... तू गलत राह कोई ले आया
मैं तो चली थी राह पिया की
तु फिर से बाबुल के घर ले आया

उतरी डोली से तब जाना
सब कुछ जैसे के तैसा ही था
लोग बदल गए थे
पर माहौल पहले जैसा ही था

आलीशान कमरा सारी सुविधाओं से भरा हुआ
यौवन उसका महगे जेवरातों से सजा हुआ
पर उस नजर के इंतजार में दिल दरवाजे पर खड़ा हुआ

न सखी न सहेली
किससे कहे मन की बात
वो अरमान भी सारे टूट गए
जो सोच के आयी थी पिया जी के साथ

छन्न से टूट गया वो सपना
यहाँ भी न मिला कोई अपना
कुछ भी नहीं था वैसा
सोचा था उसने जैसा

फिर से खिड़की के पार वो देख रही
पर अब किसी के आने की न उम्मीद रही
बुझे दिल से इसे भाग्य मान चुकी
खिड़की के पार की दुनिया को भूल चुकी

(अनुराधा श्रीवास्तव)
आशुलिपिक
जिला एवं सत्र न्यायालय, सीतापुर

एक न्यायालय कर्मचारी का कार्य प्रेम

(विवेक कुमार)
प्रधान सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, अमेठी
सम्बद्ध : मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
सदस्य (सम्पादकीय समिति)
"उद्घोष" त्रैमासिक ई–पत्रिका

किसी प्रेयशी का प्रेम पत्र नहीं,
गुनाहों के पन्ने सँजोके रखा है,
किसी शायर की गजल नहीं
बयानों की श्रृंखला बनाये रखा है,

न मिलेगी कभी नफरतें हमारे किरदार में ऐ दोस्त,
नफरतों को तो हमने फाइलों में दबा रखा है,
है इश्क तुझे बेशक तेरे महबूब से,
हमने तो इन फाइलों को ही महबूब बना रखा है,
टूटे हुए विश्वास तो, कभी मरे हुए जज्बात को
पन्नों पर उकेर रखा है,
कभी रोते हुए बाप के आँसू
तो कभी सुबकती हुयी माँ की सिसकियाँ
धागों में पिरो रखा है,

जो रहो कभी फुरसत में तो आना हमारे आशियाने,
ट्रेजडी से भरे हजारों जूलियस सीजर
अलमारी में सजा रखा है।

असफलता के बाद सफलता

अमरेश कुमार पटेल
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, कुशीनगर
(पड़रौना)

असफलता नाम की कोई वस्तु नहीं। यह हमारी सोच है, जो हमें असफल बनाती है। अतः आप क्या सोचते हैं, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। कोई घटना महत्त्वपूर्ण नहीं होती, उस घटना की व्याख्या महत्त्वपूर्ण है। अतः अपनी व्याख्या को बदलकर असफलता को सफलता में बदलें । हर व्यक्ति की जिंदगी में एक समय ऐसा आता है कि सब कुछ उसके अनुकूल नहीं होता है। इसका यह मतलब नही कि वह व्यक्ति कोशिश करना छोड़ दे, हर असफल कार्य में भी सफलता का संदेश होता है। आपको सफल होना है, तो आपको असफलता को भी स्वीकार करना होगा। सफलता का अर्थ यह नहीं है कि मैं हार गया हूं बल्कि इसका अर्थ यह है कि मुझे अभी सफल होना है। असफलता का अर्थ यह नहीं है कि मैं प्रयत्न छोड़ दूं बल्कि इसका अर्थ यह है कि मुझे पुनः लगन से मेहनत करनी है। इसीलिए असफलाओ से घबराना नहीं चाहिए असफलता सफलता की पहली सीढ़ी होती है।

''जब भी तुमको वक्त मिले''

जब भी तुमको वक्त मिले
आना हो तो आ जाना ।
द्वार हमारा खुला रहेगा
आना हो तो आ जाना ।

हम स्वतंत्र आनन्द मग्न हैं
गान सुनाने आ जाना ।
द्वार हमारा खुला रहेगा
आना हो तो आ जाना ।

हम तो ऐसे दीवाने हैं
आँगन फूल खिले रहते हैं
स्वच्छ चाँदनी, भीषण अग्नि
जीवन जोग मिले रहते हैं
गम का भी मेरे आँगन में
आकर खुशियाँ हो जाना
द्वार हमारा खुला रहेगा
आना हो तो आ जाना ।

हम वो प्रेमी नहीं हैं कि
जो गम को ओढ़े बैठे हैं
हम जीवन उत्तुंग शिखर
का राग समेटे बैठे हैं
आनन्द स्वयंभू उतर रहा है
भेंट चढ़ाने आ जाना ।

द्वार हमारा खुला रहेगा
आना हो तो आ जाना ।
जब भी तुमको वक्त मिले
आना हो तो आ जाना ।

(इन्द्रेश कुमार)
लिपिक
जनपद न्यायालय, बहराईच

सम्भव है, यदि ऐसा हो जाए परिवार सकल संसार मेरा फिर हो जाए

मस्जिद की अजां मैं हो जाऊँ,
वह पूजा की थाली हो जाए।
चखकर लंगर गुरुद्वारे का,
हमसब फिर गिरिजाघर हो जाएं।।
सम्भव है, यदि ऐसा हो जाए।
परिवार सकल संसार मेरा फिर हो जाए।।

जातियता के सारे बंधन खुल जाएं,
चहुँओर मचा है जो वह सारा क्रंदन धुल जाए।
जब मानवता ही जाति श्रेष्ठ एक रह जाए,
तब राष्ट्र धर्म का श्वेत वर्ण ही,
सब पर भारी हो जाए।।
सम्भव है, यदि ऐसा हो जाए।
परिवार सकल संसार मेरा फिर हो जाए।।

ऊँच-नीच और छुआछूत की सारी प्रतियाँ जल जाएं,
ग्रन्थ शेष मात्र एक 'संविधान' ही रह जाए।
खाई काले-गोरे की जब 'नव-काश्मीर' सी हो जाए,
सुरक्षित घर-घर की तब सब बहू-बेटियां हो जाए।।
सम्भव है, यदि ऐसा हो जाए।
परिवार सकल संसार मेरा फिर हो जाए।।

(सुनील कुमार सौरभ)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बाराबंकी

चल मेरा खलिहान देख ले

कैसा है शमशान देख ले, चल मेरा खलिहान देख ले।
अगर देखना है मुर्दा तो, चलकर एक किसान देख ले।
सर्वनाश का सर्वे कर-कर, पटवारी धनवान देख ले।
सिर्फ अंगूठा लिया सेठ ने, कितना मेहरबान देख ले।
मरहम में रख नमक लगाते, सरकारी अहसान देख ले।
देहरी पर मेरी फर्गूसन, भीतर बीयाबान देख ले।
मानसून तक मनमाना है, बस बेबस मुस्कान देख ले।
कुर्की की डिक्री पर अंकित, गिरता हुआ मकान देख ले।
कल पेशी है तहसीलों में, कोदा कुटकी धान देख ले।
सम्मन मिला कचेहरी से है, अधिग्रहण फरमान देख ले।
तस्वीरों के पर झांक कर, गांवों का उत्थान देख ले।
आ इंडिया से बाहर आ, आकर हिन्दुस्तान देख ले।

(शिवम सिंह)
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, हरदोई

एकलव्य सा...मैं

हां मैं कुछ करना चाहता हूं, एकलव्य सा बनना चाहता हूं।

नहीं पथ में कोई प्रदर्शक, नहीं कोई सहायक।
फिर भी संघर्ष की सभी जंजीरें, काटकर मैं बढ़ना चाहता हूं।।
हां मैं कुछ करना चाहता हूं, एकलव्य सा बनना चाहता हूं।

पूछ लिया सबसे मैंने, जीवन राह सफलता की।
बहुत भटक चुका हूं मैं, अब नहीं दोहराना चाहता हूं।।
हां मैं कुछ करना चाहता हूं, एकलव्य सा बनना चाहता हूं।

नहीं दिया अगर साथ किसी ने,
अब और न हाथ फैलाऊंगा। हर एक अपने जैसों के लिए,
मैं उदाहरण सा बनना चाहता हूं।।
हां मैं कुछ करना चाहता हूं, एकलव्य सा बनना चाहता हूं।

कौन कहता है अकेले जीत नहीं मिलती, भीड़ तो वजूद छीन लेती है,
बिजली सा क्षणिक नहीं मैं, सूर्य सा चमकना चाहता हूं।।
हां मैं कुछ करना चाहता हूं, एकलव्य सा बनना चाहता हूं।

(शैलेश कुमार)
सहायक अभिलेखपाल परीक्षक
जनपद न्यायालय, कानपुर नगर

नमस्कार! सर्वप्रथम "उद्घोष" ई-पत्रिका के लिए सभी को मेरी शुभकामनाएं और श्री भागवत शुक्ल जी का आभार, कि वे संघ की बेहतरी के लिए ऐसी कई रचनात्मक चीजों पर ध्यान दे रहे है, तथा काफी ज्यादा परिश्रम कर रहे है।

न्यायालय के कर्मचारियों का कौन है?

न्यायालय के कर्मचारियों का कौन है...
सब मौन है... सब मौन है... सब मौन है...
कचहरी की गलियों में कहलाते हम बाबू है।
पर कचहरी से बाहर...
हम समझे जाते बड़े खाबू है।
लेकिन... सच क्या है।
ये बताने वाला कौन है?
न्यायालय के कर्मचारियों का कौन है?
सब मौन है... सब मौन है... सब मौन है...
शेट्टी की क्या बात करें,
यहाँ तो... ई०एल०, मेडिकल, ए०सी०पी०
और प्रमोशन के मामलें...
कमेटियों में घूम रहें।
देखों तो फोटों में साहब...
कर्मचारी के माथें को चूम रहें।
इस गफलत से लुटा जा रहा,
कर्मचारी हो गया बौन है।
न्यायालय के कर्मचारियों का कौन है?
सब मौन है... सब मौन है... सब मौन है...
माँ-बाप, बीवीं-बच्चों के हाल का पता नहीं,
पर साहब के मूड... की चिन्ता है।
हद तो तब और हो जाती है।
जब इसपे भी न उसका बनता है।
बात-बात में सस्पेंशन है।
इंक्वायरी चलती रहती है।
कैसे कटेगी...
फ्यूचर में है एन०पी०एस०
ढ़लती उमरिया कहती है।
और नेता कहते है... ये मुद्दे तो गौड़ है।
न्यायालय के कर्मचारियों का कौन है?
सब मौन है... सब मौन है... सब मौन है...
मूलभुत सुविधायें जैसे टायलेट और पानी
इससे भी वंचित है... बाबू का आफिस जानी
और कितना सुनाये... ये दर्द भरी कहानी
सब मिल के कहो 'हम एक है'
'हम एक है' यह **उद्घोष** है लगानी
हमारी अस्तित्व, हमारी पहचान
ये सबके अन्दर जगाने वाला कौन है?
न्यायालय के कर्मचारियों का कौन है?
सब मौन है... सब मौन है... सब मौन है...

(नीरज मणि त्रिपाठी)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बस्ती
सदस्य (संपादकीय समिति)
"उद्घोष" त्रैमासिक ई-पत्रिका

मेजर शैतान सिंह

18 नवंबर 1962 को लद्दाख की चुसुल घाटी में हड्डी तक को गला देने वाली सर्दी में भारत मां के 124 सपूत पहरेदारी कर रहे थे। समुद्र तल से लगभग 5,000 मीटर (16000 फीट) की ऊंचाई पर स्थित था। इन 124 जवानों का नेतृत्व कर रहा था एक शख्स जिसका नाम था मेजर शैतान सिंह।

मेजर शैतान सिंह का जन्म 01 दिसंबर 1924 को राजस्थान के जोधपुर जिले के बंसार गांव में एक राजपूत परिवार में हुआ था। उनके पिता जी का नाम लेफ्टिनेण्ट कर्नल हेमसिंह था, जिनको प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फ्रांस में भारतीय सेना के साथ सेवा की और ब्रिटिश सरकार द्वारा ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर (ओ०बी०ई०) से सम्मानित किये गये थे। अपने पिता की तरह मेजर शैतान सिंह ने भारत मां के लिए कुछ कर दिखाने का सपना देखा करते थे।

मेजन शैतान सिंह ने अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद भारतीय सेना में भर्ती हुए। 01 अगस्त 1949 को ये जोधपुर राज्य बल में सामिल हुए। जोधपुर की रियासत का भारत में विलय हो जाने के बाद उन्हें कुमांऊ रेजीमेण्ट में ट्रांसफर कर दिया गया। मेजर शैतान सिंह नागा हिल्स ऑपरेशन एवं 1961 में गोवा का भारत में विलय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सन् 1962 में इनकी कार्यकुशलता व बहादुरी को देखते हुए इनका प्रमोशन करके इन्हें मेजर का पद दे दिया गया।

सन् 1962 में भारत चीन का युद्ध शुरू हो गया। मेजर शैतान सिंह को भारतीय सेना की एक टुकड़ी के साथ लद्दाख की चुसुल घाटी में 13 कुमांऊ बटालियन के सी कंपनी के साथ भारत माता की रक्षा के लिए तैनात कर दिये गये।

18 नवंबर 1962 को सुबह के करीब समय 03:30 बजे थे कि भारतीय सैनिकों ने देखा कि रेजांग इलाके के चीन की तरफ से कुछ आग के गोले तेजी से उन लोगों की तरफ बढ़े चले आ रहे हैं। ठण्ड का महीना, घनी अंधेरी रात में इस तरह से आग का गोला आना मानो पृथ्वी पर महाप्रलय होने वाली है। मेजर शैतान सिंह तुरंत समझ गये कि दुश्मनों ने रात में ही हमला कर दिया है। मेजर ने अपने सैनिकों से दुश्मनों का मुहतोड़ जवाब देने के लिए गोली चलाने का आदेश दे दिया। भारतीय सैनिकों ने फायरिंग शुरू कर दी, मगर कुछ समय बाद भारतीय सैनिकों को पता चला कि यह चीन की चाल है। वो लोग जो आग का गोला देखकर यह समझे थे कि वो चीन के सैनिक हैं और आक्रमण करने आ रहे हैं, परन्तु वो चीन के सैनिक न थे बल्कि वो जानवर थे जिनके गले में लालटेन लटकाकर चीन के सैनिकों ने भेजा था। उस समय भारत की स्थिति अच्छी न थी। भारत के पास दुश्मनों से लड़ने के लिए पर्याप्त हथियार भी न थे और चुसुल घाटी की भौगोलिक स्थिति भी भारत के विपरीत थी। भारत के पास उस समय द्वितीय विश्व युद्ध में बेकार मान ली गयी

बंदूकें थीं, ऐसी स्थिति में दुश्मनों से लड़ना बहुत ही मुश्किल था। मगर मेजर शैतान सिंह व उनके बहादुर सैनिक हार कहां मानने वाले थे।

सुबह के करीब 05:00 बजे भारतीय सैनिकों ने चीनी सैनिकों को अपनी तरफ आते देखा, तो लाइट मशीनगन, राइफल, मोर्टार व ग्रेनेड से हमला कर दिया और कई चीनी सैनिकों को मार गिराया।

सुबह के करीब 5:40 बजे चीनी सेना ने पुनः मोर्टार से हमले करना शुरू कर दिया और भारतीय सैनिकों की तरफ बढ़ने लगे। मगर भारतीय सैनिकों ने उनका मुहतोड़ जवाब दिया और चीनी सैनिकों को आगे बढ़ने से रोक दिया, तब चीनी सैनिकों ने पीछे से हमला कर दिया। मेजर शैतान सिंह ने अपने सीनियर ऑफिसर से मदद मांगी, मगर उन्हें जवाब मिला कि अभी मदद पहुंचाने का कोई उपाय नहीं है और अपने सैनिकों के साथ पीछे हट जाने का आदेश दिया। मगर मेजर इस तरह से हार मानने वाले न थे। उन्होंने सैनिकों को अलग-अलग ग्रुप बनाकर उन्हें अलग-अलग जगहों पर तैनात कर दिया और सभी भारतीय सपूत चीनी सैनिकों को मौत के घाट उतारने लगे। मेजर शैतान सिंह दौड़-दौड कर सभी ग्रुप में जाते और अपने सैनिकों का उत्साहवर्धन करते। मेजर शैतान सिंह को कई गोलियां लग गयीं, मगर मेजर शैतान सिंह हार न मानने वाले थे। मेजर के बहादुर सैनिक चीनी सैनिकों के छक्के उड़ाये पड़े थे। जब मेजर काफी घायल हो गये तो उन्होंने मशीनगन मंगायी और एक मशीनगन के ट्रिगल को रस्सी से बांध दिया और दूसरा भाग अपने पैर में बांध दिया और हाथ से बंदूक से दुश्मनों को मौत के घाट उतारने लगे।

भारत के लगभग सौ से ज्यादा सैनिक वीरगति को प्राप्त हो गये और उनके पास गोला, बारूद समाप्त हो गया तो बचे सैनिकों ने अपनी खाईयों से बाहर निकलकर चीनी सैनिकों से हाथ से लड़ने लगे। 124 में से 114 सैनिक शहीद हो गये और 5 को युद्धबन्दी बना लिये गये व 1 की हिरासत में मौत हो गयी। भारतीय सैनिकों ने लगभग 1300 चीनी सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।

कुछ महीने बाद इंडियन आर्मी ने सैनिकों के शव को खोजना शुरू किया तो मेजर शैतान सिंह का शव एक चट्टान के पीछे मिला। उनके पैर में अब भी मशीनगन की रस्सी बंधी हुई थी। मेजर के पार्थिव शरीर को जोधपुर लाया गया और सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। मेजर शैतान सिंह वर्ष 1963 में मरणोपरान्त परमवीर चक्र से सम्मानित किये गये।

(दिनेश कुमार गुप्ता)
पेशकार-न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट
जनपद न्यायालय, कौशाम्बी

कर्तव्य से बनता है देश

हम शिकायत करते हैं कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हमें देश ने कुछ नहीं दिया लेकिन यह नहीं सोचते कि हमने देश को क्या दिया। यदि सभी लोग याचना छोड़कर देश के प्रति अपने कर्तव्य निभाएं तो देश की उन्नति को कोई रोक नही सकता। आमतौर पर हम देश से अपेक्षाएं रखते हैं, स्वतंत्रता से अपेक्षाएं रखते हैं लेकिन खुद से कोई अपेक्षा नहीं रखते हैं। यह जानते हुए भी कि हम से ही देश बनता है।

हम हमेशा शिकायत करते रहते हैं कि स्वतंत्रता के इतने सालों बाद भी हमे यह नहीं मिला, हमें वह नहीं मिला। लेकिन हम या नहीं देखते कि हमने देश को क्या दिया। देशभक्ति का भाव किसी अवसर का मोहताज नहीं होता। यह हमारे भीतर का स्थाई भाव होना चाहिए। देशभक्ति का मतलब देश से अपेक्षा करना नहीं बल्कि देश के लिए कुछ करने की प्रवृत्ति पैदा होना है।

(अजय कुमार चौधरी)
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बस्ती

"हमें सोच को व्यापक बनाना चाहिए। हमारे मन में देने का भाव हो, न कि लेने का अपनी सेवाओं के द्वारा देश को जब हम देते हैं तो उसी का प्रतिफल देश हमें देता है। यदि हम सम्मान चाहते हैं तो दूसरों को सम्मान देना शुरु कर दे। यदि आप सेवा चाहते हैं तो दूसरों को सेवा करना शुरू कर दीजिए।"

'काश' हम फिर से बच्चे हो जाते,
ये झूठे रिश्ते, सब सच्चे हो जाते,
कहां फस गए इस दुनिया के झमेले में,
वो टूटे खिलौने अब फिर अच्छे हो जाते।
'काश' हम सब पुराने दोस्त अपने है जाते,
जो दूर थे हमसे वो हमारे सपने हो जाते,
हम गैर ही सही मान तो जाते मनाने से,
ताकि इस गैरों की दुनिया में हमारे भी अपने हो जाते।
'काश' वो बचपन फिर मिल जाता,
मायूस ये चेहरा फिर खिल जाता,
ना शिकायत होती कभी अपनी जिंदगी से,
गर वो एक ख्वाब हमारा हमसे सिल जाता।
'काश' वो बचपन फिर आ जाता,
प्यार में सबका फिर पा जाता,
सारे दिन सारी राते अच्छे हो जाते,
काश! हम फिर से बच्चे हो जाते।।

(सूरज कमल)
जनपद न्यायालय,
फर्रुखाबाद

श्री मसरूर अहमद खान
सेवानिवृत स्टेनो
जनपद न्यायालय, बहराइच के सम्मान में समर्पित

(लवकुश सरोज)
आशुलिपिक
जनपद न्यायालय, बहराईच

"ये जिंदगी है जो कभी रिटायर नहीं होती,
ये मुस्कान है जो कभी रिटायर नहीं होती।

अब मैं बताता हूँ क्या क्या रिटायर हो रहा है

रिटायर हो रही है कचहरी की जिम्मेदारियां,
रिटायर हो रही है अनचाही थकान, रिटायर हो रही है,
सभी कामों को समय पर पूरा करने की जद्दोजहद।

साथ ही रिटायर हो रही है,
सुबह सुबह स्टेनो ग्रुप में धन्नी होटल की चाय,
रिटायर हो रहे है आपके कुछ तफरी वाले शब्द जैसे मेडिकल,
प्रयोगशाला, कोटा वा बी सी ओ आफिसर।
रिटायर हो रहे सारे सी एल, ई एल, व मेडिकल लीव।

अब मैं बताता हूँ रिटायरमेंट के बाद आपको क्या क्या मिलने वाला है

मिलने वाली है एक नई सुबह, जिसमे होगी एक अलमस्त नींद।
लाइफ होगी बिदाउट टेंशन, और रजाई में ही लेट कर मिलेगी फुल पेंशन।
मिलने वाला है पोते पोतियों का प्यार,
घर परिवार में व्यस्त होकर सजेगा नया संसार।

यह ठीक की हमे आपकी व आपको हमारी याद आयेगी,
और यही याद हमे आपके घर चाय पकोड़ी पर खींच लाएगी।

अंतिम दो शब्द से करूंगा

आपकी याद जेहन में रहेगी सदा,
मुस्कुराती सी वो सूरत नजर आयेगी,
स्वस्थ, सुखमय हो जीवन आपका,
यही है हमारी कामना।

माँ का आर्शीवाद

(सुरेश सिंह)
संयुक्त सचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ०प्र०
शाखा–औरैया

राधेश्याम उत्तर प्रदेश के एक छोटे गाँव का रहने वाला था, पिता रामदास पुश्तैनी खेती का कार्य करते थे व माता सियारानी कम पढ़ी–लिखी महिला घर–गृहस्थी का काम करती थीं। पिता रामदास बेटे को पढ़ा–लिखाकर अफसर बनाना चाहते थे। इसको पूरा करने के लिए उन्होने परिवार की बहुत सी जरूरतों को कम करके राधेश्याम को गाँव के ही विद्यालय से इण्टरमीडिएट पास होने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दाखिला करवाया । बेटा राधेश्याम भी पिता के सपने को साकार करने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता था, इसके लिए उसने जी तोड़ मेहनत कर पढ़ाई की और द्वितीय श्रेणी में बी० ए० की परीक्षा पास की। बी० ए० पास होने के बाद राधेश्याम उ०प्र० सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी में जुट गया। माता–पिता को इकलौते बेटे से बहुत आशा थी कि बेटा जल्दी ही अफसर बन जाये और हम लोगों का व गाँव का नाम रोशन करे।

बेटा राधेश्याम भी माँ पिता के सपने को पूरा करने के लिए जी तोड़ मेहनत करनी शुरू कर दी व उ० प्र० सिविल सेवा परीक्षा की प्री परीक्षा पास कर ली व मेंस परीक्षा की तैयारी में जुट गया। बेटा जब गाँव जाता, माँ का पैर छूकर आशीर्वाद लेता तो माँ के मुँह से ''जज हो जा बेटवा'' का आशीर्वाद मिलता। मेंस परीक्षा का रिजल्ट आया राधेश्याम मेंस परीक्षा में पास नहीं हो सका और एक बार फिर से तैयारी में लग गया। इस तरह कुल तीन बार मेंस परीक्षा नहीं पास कर सका। एक दिन राधेश्याम घर जाकर अपने माता–पिता से मिला। मां के पैर छूते ही माँ ने जज हो जा बेटवा का आर्शीवाद दिया। इलाहाबाद वापस जाने के बाद राधेश्याम अपने कमरे में बैठा सोच रहा था तभी माँ का दिया आर्शीवाद ''जज हो जा बेटवा'' याद आया। राधेश्याम इस वर्ष एल० एल० बी० में एडमिशन ले लिया। समय बीतते पता ही नही चला और एल० एल० बी० पूरी हो गयी। माँ का आर्शीवाद लेकर राधेश्याम इस बार जज की परीक्षा में सम्मिलित हुआ और प्रथम प्रयास में ही जज बन गया।

इस पूरी कहानी के सारांश के रूप में यह निष्कर्ष निकलता है कि माँ का आशीर्वाद किसी सन्तान के जीवन में बहुत महत्व रखता है, एक माँ निस्वार्थ भाव से अपने बच्चे के उज्ज्वल जीवन के लिए सच्चे मन से जो आर्शीवाद देती है ऊपर बैठे ईश्वर भी उसे अस्वीकार नहीं कर पाते हैं।

सत्यमेव जयतेः आदर्श वाक्य

हमारे देश का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते" जिसका सामान्य अर्थ है सत्य की सदैव ही विजय होती है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक में इसका उल्लेख देवनागरी लिपि में है। हमारे पौराणिक ग्रंथो में भी सत्य और असत्य की चर्चा की गयी है जिसमे सत्य के प्रयोग को सृष्टि का मूल आधार माना गया है। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना रखने वाले हमारे देश के परिप्रेक्ष्य में इस शब्द की महत्ता और भी बढ़ जाती है। यह सर्वविदित है कि हमें लंबे संघर्ष तथा असंख्य बलिदान देने के उपरांत स्वतंत्रता प्राप्त हुई है और शायद इसीलिए स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ही भारतीय विचारकों द्वारा इस वाक्य को आदर्श के रूप में माना जिससे वर्षों से प्रताड़ित देशवासियों को आजादी के बाद सुख और समृद्धि प्राप्त हो सके । वास्तव में इस शब्द का उद्देश्य ही है कि सभी व्यक्ति सत्य की राह पर चले और अपना सर्वांगीण विकास करें क्योंकि सत्य किसी क्षणमात्र के लिये तो शक्तिहीन हो सकता है परन्तु पराजित नहीं हो सकता है। सत्य की शक्ति मनुष्य को किसी भी विषम परिस्थिति से उबार सकती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस वाक्य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सूक्ति वाक्य अब केवल राष्ट्रीय अभिलेखों के साथ–साथ व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका से सम्बंधित कार्यालयों की शोभा बढ़ाने तक सीमित रह गया है। यह सर्वविदित तथ्य भी है कि "सत्यमेव जयते" सूक्ति लगभग समस्त अति महत्वपूर्ण स्थानों पर चाहे वह विधायिका, कार्यपालिका या न्यायपालिका से सम्बंधित हो, लिखा प्राप्त होता है, लेकिन यदि गौर किया जाय तो यह तथ्य सामने निकलकर आता है कि वास्तव में शायद ही इसका पालन कहीं किया जाता हो, चाहे इसके पीछे कारण कुछ भी हो। वास्तव में यह अमूल्य सूक्ति सिर्फ एक साधारण वाक्य बनकर रह गया है, जबकि यह वाक्य अपने आप में एक वृहद अर्थ समेटे हुए है और इसमें सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना अंतर्निहित है अर्थात कहा जा सकता है कि इस सूक्ति वाक्य पर एक पुस्तक लिखी जा सकती है। वास्तव में इसका पालन भी हम सबको ही करना है और सभी इस तथ्य से भली-भांति परिचित भी हैं कि सत्य क्या है और इसके अनुकरण का परिणाम क्या है परंतु कोई भी मनुष्य व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति हेतु इस सत्य को स्वीकारना नहीं चाहता है।

देश की न्याय-व्यवस्था में इस शब्द का महत्व काफी बढ़ जाता है क्यों कि न्यायपालिका लोकतंत्र का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्रमुख आधार स्तम्भ है। न्यायपालिका को संविधान एव न्याय का संरक्षक माना जाता है परंतु वर्तमान न्यायपालिका में जों विसंगतियां हैं वे जगजाहिर हैं और इन विसंगतियों को दूर करके की न्यायपालिका के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकेगा। आमजन को त्वरित, भ्रष्टाचारमुक्त व सस्ता न्याय उपलब्ध कराना किसी भी लोक कल्याणकारी राज्य का प्रथम उद्देश्य होना चाहिए तभी यह मिथक दूर होगा कि मुकदमा कभी मरता नहीं क्यों कि इसकी उम्र न्यायपालिका द्वारा निर्धारित की जाती है। वास्तव में न्याय प्रक्रिया में होने वाली देरी ही इसे इतना खर्चीला बना देती है कि आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लोग न्यायालय, कचहरी के नाम से डरते हैं। वर्तमान समय में न्यायालयों में लंबित मामलों का अंबार है कई मामले पचासों साल से लंबित पड़े हैं, कर्मचारी-अधिकारी फाइलों के बोझ तले दबे हैं। पूर्व में गठित न्यायिक आयोग द्वारा कार्य अधिकता को दृष्टिगत रखते हुए न्यायालयों में जजों की संख्या में वृद्धि करने के साथ ही कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने तथा उनके मानकानुसार कार्य निर्धारण की सिफारिश की गयी थी परंतु अभी तक सत्तासीन सरकारों द्वारा उक्त सिफारिशों को लागू किये जाने की दिशा में कोई प्रभावी कदम नहीं उठाया गया है। इस प्रकार न्यायपालिका जिसे हम सत्यमेव जयते का संरक्षक कहते हैं, में व्यापक स्तर पर क्रांतिकारी बदलाव की जरूरत है और तभी इस राष्ट्रीय आदर्श वाक्य की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी।

शासन-प्रशासन की शुचिता का प्रतीक हमारे ऐतिहासिक राष्ट्रीय आदर्श वाक्य को अपने जीवन शैली में सम्मिलित करके हम अपने राष्ट्र के विकास में छोटा सा योगदान दे सकते हैं और यही हमारे पूर्वजों के साथ-साथ उन महान क्रांतिकारियों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी, जिन्होंने देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

(सुधीर कुमार पाण्डेय)
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, जौनपुर

मानव की यात्रा अनन्त

ग्रीष्म सताए चाहे रुलाए।
आगे तुझको बढ़ते जाना,
तपिश हो सूरज में जितनी भी,
कभी नहीं तुझको है रुकना।
साफ दिखे या धुँधला हो,
कभी नहीं है घबराना।
गगन भरा हो नीरद से,
वर्षा में ना रुक जाना।
लक्ष्य सामने हो या ना,
मंजिल चाहे ना हो पाना।
रुकना फिर भी कभी नहीं,
शरद के संग भी चलते जाना।
शाश्वत सत्य यह है एक,
मानव की यात्रा अनन्त।
तुम आगे ही बढ़ते जाओ,
साथ में आएगा हेमन्त।
आगे तो बढ़ना ही है,
बर्फ पड़े या कुहरा छाए।
शिशिर तुम्हारे साथ चलेगा,
कदम तुम्हारे बढ़ते जाएं।
आगे जब तुम और बढ़ोगे,
स्वागत में आएगा वसन्त।
रुक ना जाना श्रम में आकर,
यात्रा का ये नहीं है अन्त।

उतना ही पाओगे

बादल बन जाते हैं कैसे,
कैसे होती सुबह ओ शाम।
आसमान में उड़ते पंक्षी,
नदियां जातीं अपने धाम।
धूप निकलती बारिश होती,
तेज हवाएं कभी हैं चलती,
रात चांदनी कभी है काली,
फूल हैं खिलते डाली डाली।
इसी को कहते हैं कुदरत,
चाहे कह लो प्रकृति या नेचर।
जितना प्यार करोगे इससे,
उतना ही पाओगे केयर।

(अविनाश राय)
प्रधान सहायक
जनपद न्यायालय, संतकबीरनगर

ख़्वाब-ए-मोहब्बत जो दिल मे पाल लिया हमने,
न वाकिफ थे, ये क्या बवाल लिया हमने।
कभी झुमके, कभी पायल, कभी कंगन,
तोहफा-ए-जन्मदिन उसका हर साल लिया हमने।
न पहना पाए कभी इन हाथों से उसे,
वो अलग मलाल लिया हमने।
उस बुत के इक काम को सारा शहर सर पे उठाया,
और मार खाई माते से कि उनके कामों को टाल दिया हमने।
और बहके जो इक झलक से उसकी देख खिड़की पे उसे,
गुर्राते देख अब्बू को उसके, खुद को संभाल लिया हमने।
ख़्वाब-ए-मोहब्बत जो दिल मे पाल लिया हमने,
न वाकिफ थे, ये क्या बवाल लिया हमने।

इक आग है सीने भीतर,
मै सबर कर रहा हूँ।
कोई छुए न मुझे,
मैं खबर कर रहा हूँ।
दूर बड़ी है मंजिल,
मैं सफर कर रहा हूँ।
चंद आराम कमाने खातिर,
खुद को दर-ब-दर कर रहा हूँ।
बर्ताव है उसका बदला,
फिर भी गुजर कर रहा हूँ।
यादें हैं उसकी मीठी,
मै उनमें जहर भर रहा हूँ।
गिर चुका हूँ
नजरों में खुद की,
नफरत उसे अब इस कदर कर रहा हूँ।
इल्म है मुझे सजा का,
ताहम ये गुनाह हर पहर कर रहा हूँ।
शराब की है नाकामी,
ये तो, "मैं" हूँ जो असर कर रहा हूँ।

(रोहित गुप्ता)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, फिरोज़ाबाद

कहाँ पर बोलना है, और कहाँ पर बोल जाते हैं।
जहाँ खामोश रहना है, वहाँ मुँह खोल जाते हैं।।

कटा जब शीश सैनिक का, तो हम खामोश रहते हैं।
कटा एक सीन पिक्चर का, तो सारे बोल जाते हैं।।

नयी नस्लों के ये बच्चे, जमाने भर की सुनते हैं।
मगर माँ बाप कुछ बोले, तो बच्चे बोल जाते हैं।।

बहुत ऊँची दुकानों में, कटाते जेब सब अपनी।
मगर मजदूर माँगेगा, तो सिक्के बोल जाते हैं।।

अगर मखमल करे गलती, तो कोई कुछ नहीं कहता।
फटी चादर की गलती हो, तो सारे बोल जाते हैं।।

हवाओं की तबाही को, सभी चुपचाप सहते हैं।
चरागों से हुई गलती, तो सारे बोल जाते हैं।।

बनाते फिरते हैं रिश्ते, जमाने भर से अक्सर हम
मगर घर में जरूरत हो, तो रिश्ते भूल जाते हैं।।

कहाँ पर बोलना है, और कहाँ पर बोल जाते हैं
जहाँ खामोश रहना है, वहाँ मुँह खोल जाते हैं।।

(वैभव कुमार)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बिजनौर

खुशहाली मानव जीवन की बुनियाद है, स्वस्थ, खुशहाल और सार्थक जीवन जीना हमारे देश के नागरिकों का मौलिक अधिकार है, हालांकि हमने आर्थिक तरक्की के मापदंडों पर बेहतर किया है लेकिन हम दुनिया में खुशहाली के मानकों पर अभी बहुत पीछे हैं। वर्ल्ड हैप्पीनेस इंडेक्स 2021 की रिपोर्ट में 149 देशों की सूची में हमारा स्थान 139वाँ है।

भारत की आत्मा बहुलतावाद और सहिष्णुता में बसती है, यह बहुलता हमारे हमारे समाज में सदियों से विभिन्न विचारधाराओं के समाहित होने से आई है। धर्मनिरपेक्षता और समावेशी जीवन हमारे लिये आस्था का सवाल है। यह हमारी साझी संस्कृति ही है जो हमें एक राष्ट्र के तौर पर निर्मित करता है।

(विनय कुमार शुक्ला)
प्रान्तीय उपमहामंत्री
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश

मेरी आवाज सुनो

न्यायपालिका हमारे देश के गणतन्त्र के तीन प्रमुख अंगो में से एक है। सभी के अधिकारों की रक्षा करते हुए उन्हें समान और निश्पक्ष न्याय प्रदान करने का कार्य हमारी न्यायपालिका द्वारा सम्पादित किया जाता है। न्यायपालिका द्वारा प्रत्येक नागरिक को निष्पक्ष और समान न्याय प्रदान किये जाने हेतु यह अत्यन्त आवश्यक है कि न्यायपालिका स्वतंत्र एवं निडर हो। न्यायिक तंत्र के स्वतंत्र होने के लिये विभिन्न देशों द्वारा भिन्न-भिन्न उपाय अपनाये गये हैं। भारत में न्यायपालिका को गणतन्त्र के अन्य दो महत्वपूर्ण स्तम्भों कार्यपालिका व व्यवस्थापिका से स्वतंत्र रखा गया है। न्यायपालिका पर इनका किसी भी प्रकार कोई दबाव नहीं है। भारतीय संसद को न्यायपालिका के क्षेत्राधिकार को कम करने की शक्ति प्राप्त नहीं है। न्यायिक तंत्र को कार्यपालिका व विधायिका के कार्यों एवं सिद्धांतों का न्यायिक पुनर्विलोकन करने की करने की भी शक्ति प्राप्त है। इस तरह से भारत में न्यायपालिका को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है।

किन्तु जब बात न्यायपालिका के आधारभूत स्तम्भ इनके कर्मचारीगण की आती है तो ऐसी महत्वपूर्ण व शक्तिशाली इकाई में के परिवार का एक महत्वपूर्ण अंग होते हुए भी विभिन्न न्यायालयों में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हमारे कर्मचारीगणों की स्थिति अत्यन्त विचारणीय है। आज के आधुनिक एवं वैज्ञानिक युग में जबकि विज्ञान की मदद से या फिर आधुनिक विकसित व्यवस्था द्वारा लोगों का जीवन सरल और सुव्यवस्थित हो रहा है। किन्तु हमारे न्यायालयों और उसमें कार्यरत कर्मचारीगण की स्थिति अभी भी गुलाम देश के नागरिकों जैसी है। विधि अनुसार जो सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं उसके अनुसार कर्मचारी से कार्य नहीं लिया जाता है, बल्कि एक कर्मचारी से दस-दस लोगों के बराबर कार्य लिया जाता है, किन्तु सुविधाओं के नाम पर केवल निराशा मिलती है। पराकाष्ठा तो तब है जब अत्यधिक कार्यभार से परेशान कर्मचारी द्वारा निमित्त मात्र की त्रुटि होने पर (भले ही वह अन्य व्यक्ति द्वारा की गयी हो या फिर मात्र लिपिकीय त्रुटि हो) उसे त्वरित कठोर दण्ड से दण्डित किया जाता है। वहीं पर यदि कर्मचारी को कोई लाभ मिलना हो (जो कि उसका अधिकार है), सैकड़ों नियमावलियों की आड़ लेकर उसे रोका जाता है अन्यथा प्रदान करने में विलम्ब किया जाता है।

हालांकि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 13 के अनुसार न्यायपालिका को 'मूल अधिकारों का प्रहरी' कहा गया है। किन्तु यहीं पर न्यायिक कर्मचारियों का सबसे अधिक शोषण किया जाता है। उनके मौलिक अधिकारों का हनन होता है। अन्य विभागों के लिपिकीय संवर्ग का कार्य सामान्य किस्म का होने और न्यायपालिका में लिपिकीय संवर्ग का कार्य तकनीकी होने के पश्चात् भी एक समान वेतन प्रदान किया जाता है। न्यायिक कर्मचारी को अपने ही अधिकारों को प्राप्त करने के लिये दूसरों पर आश्रित होना पड़ता है।

आज जरूरत है कि हम अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिये एकजुट हों, संगठित हों। एक कहावत है कि "अकेला चना कभी भाड़ नहीं फोड़ता।" कुछ करने के लिये और अपने अधिकारों को पाने के लिये एक-दूसरे की टांग खींचने के बजाय हम एक-दूसरे का साथ दें। एक-दूसरे में कमी ढूढ़ने के बजाय एक-दूसरे के पूरक बनें। **अपनी समस्या अपने तक रखकर और संघ कुछ नहीं कर रहा या कुछ नहीं हो सकता, यह सोचना ही हम लोगों को इन हालात में रहने के लिये मजबूर किये है।** समस्या कोई भी किसी की भी हो साथ आइए बात कीजिऐ और एक जुट होकर समस्याओं को हल निकालने का प्रयास कीजिए। पांच अंगुलियां जब एक साथ होती हैं तो संगठित होकर एक ताकत बन जाती हैं। याद रखिए संगठित होकर तो चींटियां भी बड़े से बड़ा काम कर लेती हैं, हम तो इन्सान हैं।

एक कहावत है- एकता का किला बड़ा मजबूत होता है,
इसके भीतर रहकर कोई प्राणी दुःख नहीं भोगता।

(आशीष कुमार मिश्र)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, मुजफ्फरनगर

तमाशबीन दुनिया

वीरानी सी इस दुनिया में,
कौन भला अपना होता है।
जब मुश्किल हो वक्त तुम्हारा,
देखो साथ कौन खड़ा होता है ।।

क्या करूँ शिकायत दुनिया से इस
जहाँ अपने-अपनों का मेल नहीं।
तमाशबीन बनी दुनिया यह,
देखे जन-जन का खेल यहीं।।
ऐसी स्थिति में परखो तुम,
कौन साथ तुम्हारा देता है।
जब मुश्किल हो वक्त तुम्हारा
देखो साथ कौन खड़ा होता है।।

(सत्यम वर्मा)
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बस्ती

हे कर्मवीर ! रुक जाना नहीं, तुम कहीं हार के
तिमिरोपरांत मिलेगा, पुंज तुम्हें प्रकाश के।

मुस्कुराएगा गुलशन, तुम्हारे अदम्य जज्बात से
देश फिर हंसेगा, तुम्हारे अमूल्य योगदान से।

(प्रीती पाठक)
सांस्कृतिक सचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ०प्र०
शाखा–गौतमबुद्धनगर

इतिहास के झरोखे से

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में 17 सितंबर को 42 वर्ष पहले प्रादेशिक हड़ताल का नेतृत्व श्री महेश प्रकाश माथुर प्रांतीय अध्यक्ष एटा तथा नंद कुमार श्रीवास्तव लखनऊ में महासचिव के रूप में किया था। सभी प्रदेश के कर्मचारी कलेक्ट्रेट कर्मचारियों के वेतनमान के समान वेतन को लेकर अनिश्चित कालीन हड़ताल पर चले गये थे। कालांतर में इस आंदोलन का नेतृत्व फैजाबाद की श्री कृष्ण स्वरूप एवं कुमारी आज्ञावन्ती सोखी ने किया। लखनऊ के लखनऊ के श्री श्याम सुंदर श्रीवास्तव, फतेह अली खान, कुलदीप कुमार, प्रेम किशोर श्रीवास्तव, मदन मोहन अस्थाना, विजय कुमार बाराबंकी से अनिल शुक्ला, श्री प्रेम नारायण श्रीवास्तव, श्री हनुमान प्रसाद बाजपेई जी, फैजाबाद से श्री रघुनाथ सिंह, राजाराम वर्मा, श्री विजय श्रीवास्तव, जौनपुर से कुलदीप मौर्य, उमेशप्रसाद श्रीवास्तव, वाराणसी से श्री उमेश प्रसाद सिंह, श्री गुलाबचंद पांडे, श्री अनिल श्रीवास्तव, श्री सिंह शिवपुर निवासी उमेश श्रीवास्तव, जोखन यादव, मंगल सिंह जो बाद में न्यायिक अधिकारी हो गए। बलिया से हृदय नारायण पांडे, रामजीत सिंह, श्रीनिवास उपाध्याय, देवरिया से प्रमुख मोहम्मद अनस आजमी। गोरखपुर से मो० नसीम खान, शिव प्रताप सिंह, राम नारायण सक्सेना, बस्ती से श्री राम प्रकाश पाण्डेय, गोंडा से श्री मुक्ति नाथ गुप्ता, कैलाश नाथ मिश्र बहराइच, सोमेश्वर पांडे परमेश कुमार, सीतापुर से सुंदर लाल पांडे, विमल विमल श्रीवास्तव, हैदर हुसैन, ओम प्रकाश पाल और राठौर जी प्रमुख थे । इसी प्रकार शाहजहांपुर से शिवराम शुक्ला, सुधीर विद्यार्थी, एसएस जौहरी, जगदीश प्रसाद, ओमपाल सिंह, बरेली से पूरन लाल आर्य, जगदीश प्रसाद, मरगूब हुसैन जैदी, राजेंद्र प्रसाद सक्सेना, सरदार सरजीत सिंह, श्रीजोहरी गोपाल लाल सक्सेना, श्री भटनागर जी, बिजनौर से कृष्ण गोपाल, एसपीएन श्रीवास्तव, सुधीर कुमार विश्नोई, सहारनपुर से घसीटा मल जैन, विजय कुमार खुराना, ओम प्रकाश शर्मा, गाजियाबाद से योगेंद्र शर्मा, तेजपाल सिंह, करण सिंह, बुलंदशहर से सीनियर कौशिक तथा उनके बेटे विजय कौशिक सत्य प्रकाश शर्मा, राजवीर सिंह, अलीगढ़ से

श्याम बहादुर सक्सेना, श्याम बाबू शर्मा, गोवेन्द्र पाल सिंह, विमल कुमार गोड़, बदायूं से सत्यवान सक्सेना, सैयद जफर हुसैन, महेंद्र सिंह शंखधर, हरदोई के बी० एन० सिंह। श्री अग्निहोत्री, श्री बाजपेई, उन्नाव के सुरेश चंद्र गुप्ता, रमेश सिंह, श्री राजेंद्र जौहरी, रायबरेली के श्री त्रिभुवन नाथ श्रीवास्तव, जगदेव प्रसाद, श्री मौर्य, सुल्तानपुर के एसपी श्रीवास्तव, श्रीवास्तव बन्धू प्रतापगढ़ के जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, मनोकानिका उपाध्याय, सोमेश्वर पांडे, सुशील तिवारी, इलाहाबाद के के० बी० लाल, मिर्जापुर के कड़े दीन पांडे, सीताराम गुप्ता, जागेश्वर श्रीवास्तव जी, मथुरा के श्री राम नारायण सक्सेना, सरल कुमार शर्मा, आगरा के रघुनाथ प्रसाद मिश्रा, चख्खनलाल पिप्पल, अनिल हजेले, अरविंद कुलश्रेष्ठ, अनिल श्रीवास्तव, मैनपुरी के सिंह साहब, रमेश मिश्र व जगमोहन सिंह, श्री सक्सेना जी, महेश प्रकाश माथुर, मिथलेश सक्सेना, हरेन्द्र सारस्वत, मुनीष चंद्र मिश्रा, कानपुर नगर के श्री रवि कुमार श्रीवास्तव, अनंत कुमार शुक्ला, महाकाल त्रिपाठी, राजेंद्र प्रसाद, आर्य गोयल, लखीमपुर के गिरीश मिश्रा, विरस शुक्ला बंधु, भाई सोनकर, इसके अतिरिक्त अल्मोड़ा के केसर सिंह बोरा, पूरन चंद भंडारी, नैनीताल की पंत जी पिथौरागढ़ के साथी उत्तरकाशी के उपाध्याय जी, टिहरी के विष्ट, जी चमोली के नेगी तथा देहरादून के विद्यादत्त शर्मा, अनिल गर्ग, रवि गुलाटी, वी० एन० गर्ग, आजमगढ़ के तत्कालीन सदर मुंसरिम श्री शिव प्रसाद शर्मा, अंबु अब्दुल मूईन, देवनाथ मिश्रा व संतोष श्रीवास्तव, इटावा के गोस्वामी जी तथा माता प्रसाद मिश्रा श्री संतोष सिह तथा राकेश शर्मा आदि आदि प्रमुख लोग इस आंदोलन में सक्रिय भागीदारी किए थे। कुछ काफी संख्या में साथियों के नाम याद ना होने के कारण छूट गए हैं। दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश के इतिहास में इन सभी का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाए और ऐसे ही याद किया जाए।

(डॉ0 विजय कुमार)
भूतपूर्व प्रांतीय अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश

(नरेन्द्र विक्रम सिंह)

प्रांतीय महासचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

(डॉ0 नृपेन्द्र सिंह)

प्रांतीय अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

http://dnksup.com/

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश की गतिविधियों से निरन्तर अवगत होते रहने के लिए संघ की वेबसाइट जुडें.....

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ का गौरवशाली इतिहास, संघ के स्वर्णाक्षर, संघ के ऐतिहासिक दस्तावेज, प्रांतीय एवं जिला कार्यकारिणी, संघ द्वारा किये जा रहे प्रयास एवं संघ के प्रयासों पर मा0 न्यायालय के आदेश, संघ की नियमावली, सेवा सम्बन्धित नियमावली, सेवा सम्बन्धी शासनादेश, उद्घोष ई-पत्रिका, संघ गतिविधियों सम्बन्धित छायाचित्र, विडियो, ब्लाग व संघ से सीधा सम्पर्क करने के लिये सवांद पत्र जैसी सेवाओं से परिपूर्ण।

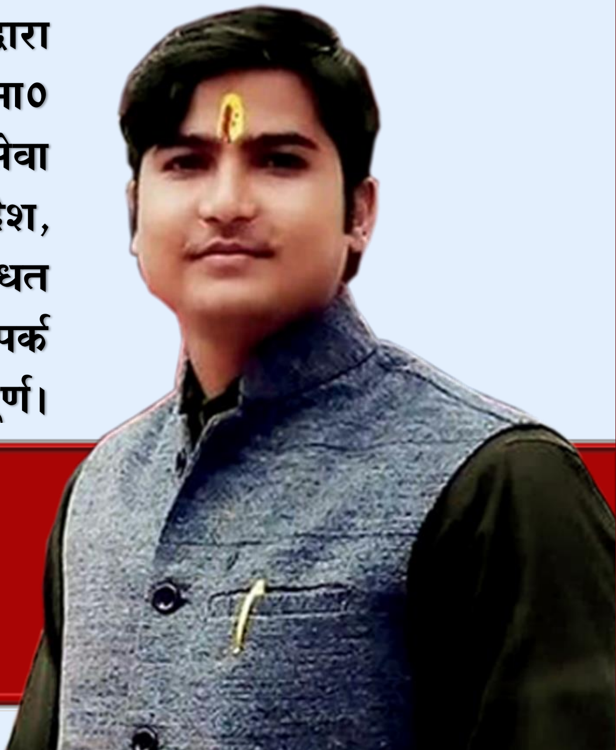

(भागवत शुक्ल)
प्रांतीय संयुक्त सचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश
E-Mail : jointsecretary@dnksup.com

बच्चों का कोना

सीख

सिखाता वक्त भी है।

सिखाते शिक्षक भी हैं।

दोनों में फर्क सिर्फ इतना ही है कि

शिक्षक सिखाकर परीक्षा लेते हैं,

और वक्त परीक्षा लेकर सिखाता है।

Taawish Ali

(Class 10th - B)

S/o Sri Sajid Ali

Civil Court, Varanasi

मोहम्मद अहमद

सुपुत्र मोहम्मद अशरफ नारवी

वरिष्ठ सहायक

जनपद न्यायालय, फैजाबाद

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

विषय : SAVE TREE

Satvik Mishra

Class- II[nd]
S/o Shri Amit Mishra
System Administrator
District Court, Lucknow

रंग बिरंगी होती है चिड़िया
बच्चों के मन को भाती चिड़िया।
सुबह–सुबह फुदक फुदक गाना गाती चिड़िया
अपने बच्चों के संग नहाती चिड़िया।
रंग बिरंगी होती है चिड़िया
बच्चे के मन को भाती चिड़िया।
खरपतवार लाकर घोंसला बनाती चिड़िया
शाम होने से पहले अपने बच्चों के लिए दाना लाती चिड़िया।
सबके मन को भाती चिड़िया
रंग बिरंगी होती है चिड़िया।

रुद्र सिंह

सुपुत्र श्री समरजीत सिंह (अध्यक्ष)
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ०प्र०
शाखा– भदोही

नहीं रुकेंगे नहीं झुकेंगे
नहीं रुकेंगे नहीं झुकेंगे
स्वच्छ भारत बनाकर रहेंगे।
अपने विद्यालय एवं देश का नाम
स्वच्छता में बढ़ाकर रहेंगे।
हम बच्चे प्यारे प्यारे
अध्यापक अध्यापिका एवं प्रधानाचार्य
स्वच्छ भारत बनाएंगे ।
हम बच्चों का यही सपना पढ़ाई के साथ
स्वच्छता में नाम हो अपना।
नहीं रुकेंगे नहीं झुकेंगे
स्वच्छ भारत बनाकर रहेंगे ।

स्वच्छता है संकल्प अपना , नहीं रुकेंगे नहीं झुकेंगे
अपने देश का नाम स्वच्छता में बढ़ाकर रहेंगे
नहीं रुकेंगे नहीं झुकेंगे।

संपदा सिंह
सुपुत्री श्री समरजीत सिंह (अध्यक्ष)
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ०प्र०
शाखा- भदोही

अंशिका शुक्ला

Class-3rd

सुपुत्री श्री आशुतोष शुक्ल

जनपद न्यायालय, बस्ती

अर्विता सिंह

Class-IInd

सुपुत्री श्री अमित कुमार

वरिष्ठ सहायक

जनपद न्यायालय, बस्ती

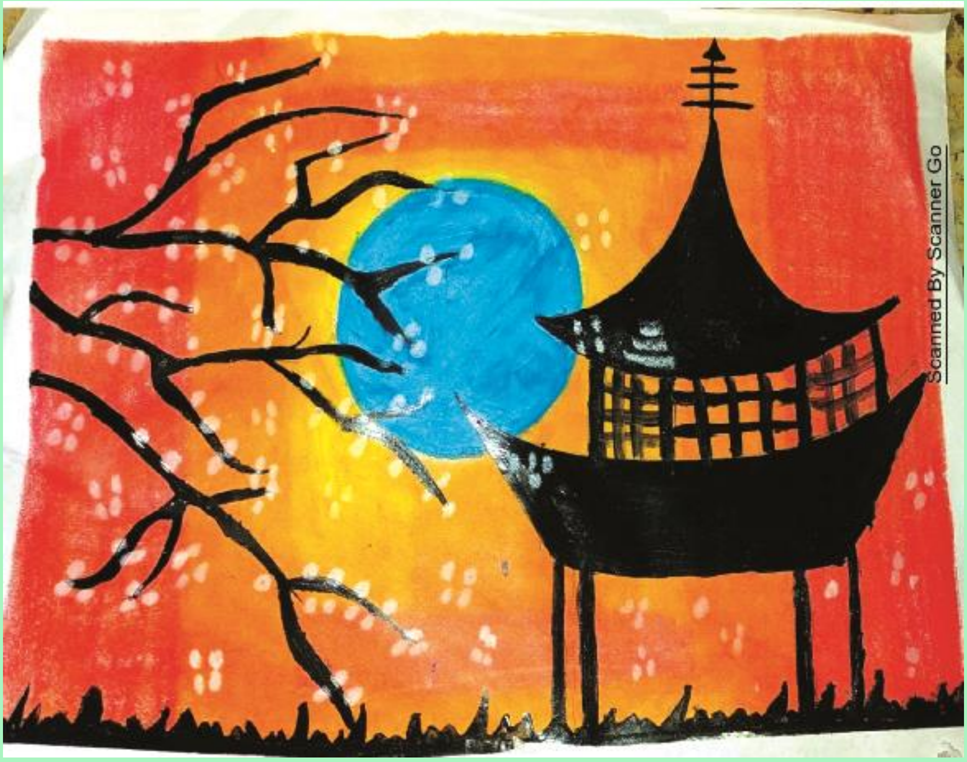

Dhatri Dwivedi

Class-5th

सुपुत्री श्रीमती ममता तिवारी

रीडर

जनपद न्यायालय, गौतमबुद्धनगर

Arnima Pathak

Class-5th

सुपुत्री श्रीमती प्रीति पाठक

सांस्कृतिक सचिव

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ

उ०प्र०, शाखा-गौतमबुद्धनगर

Sanvi

Class-4th

D/o Smt. Meenu Sapra

लिपिक

जनपद न्यायालय, गौतमबुद्धनगर

Riddhi Pathak

Class UKG

सुपुत्री श्रीमती प्रीति पाठक

सांस्कृतिक सचिव

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ

उ०प्र०, शाखा-गौतमबुद्धनगर

Samyak Singh

सुपुत्र श्रीमती सुनीता गौतम

रीडर

जनपद न्यायालय, गौतमबुद्धनगर

रीतिका सिंह

Class-8th

सुपुत्री स्व० अंजनी कुमार सिंह

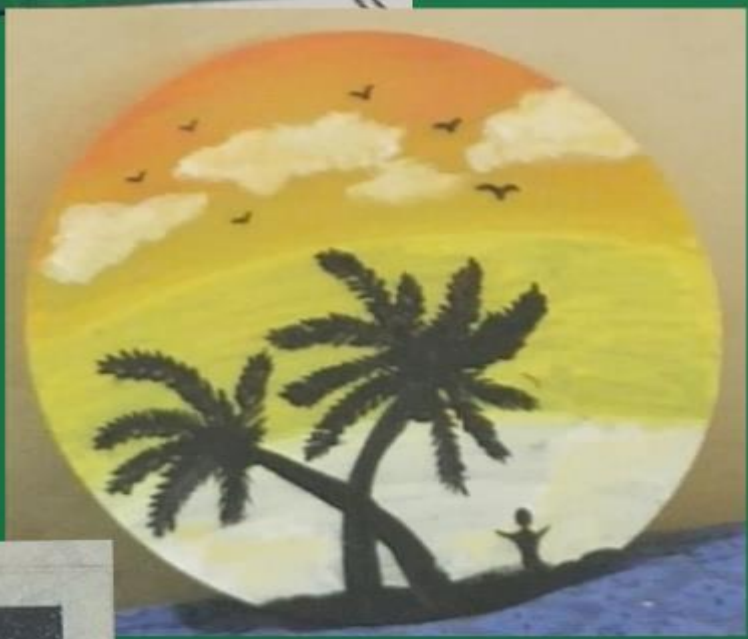

संगठन के प्रति श्रद्धा

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, शाखा-बस्ती शपथ ग्रहण समारोह के दौरान जनपद न्यायालय, बस्ती की न्यायिक कर्मचारी सुश्री अंजू सागर जी एवं श्रीमती निर्मला सिंह जी द्वारा बनाई गई अद्भुद रंगोली

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, शाखा-जनपद न्यायालय, बस्ती के नवनिर्वाचित पदाधिकारीगण का शपथ ग्रहण समारोह दिनांक 03 सितम्बर, 2021

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह सितम्बर में शाखा-जनपद न्यायालय, बलरामपुर में नवीन कार्यकारिणी का गठन

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह महाअभियान के तहत शाखा-जनपद न्यायालय, लखीपुर खीरी में नवीन कार्यकारिणी गठन दिनांक 13.08.2021

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह महाअभियान के तहत शाखा-जनपद न्यायालय, सीतापुर में नवीन कार्यकारिणी गठन दिनांक 28.08.2021

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह सितम्बर में शाखा-जनपद न्यायालय, फर्रुखाबाद नवीन कार्यकारिणी गठन दिनांक 25.09.2021

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह सितम्बर में शाखा-जनपद न्यायालय, इलाहाबाद नवीन कार्यकारिणी का गठन दिनांक 19.09.2021

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह सितम्बर में शाखा-जनपद न्यायालय, मेरठ में नवीन कार्यकारिणी का गठन दिनांक 25.09.2021

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह सितम्बर में शाखा-जनपद न्यायालय, रायबरेली में नवीन कार्यकारिणी का गठन दिनांक 25.09.2021

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह सितम्बर में शाखा-जनपद न्यायालय, कानपुर नगर में नवीन कार्यकारिणी का गठन

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह सितम्बर में शाखा-जनपद न्यायालय, हरदोई में नवीन कार्यकारिणी का गठन

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश, संघ सशक्तिकरण माह सितम्बर में शाखा-जनपद न्यायालय, औरैया में नवीन कार्यकारिणी का गठन

सर्व श्री नृपेंन्द्र सिंह जी (प्रांतीय अध्यक्ष महोदय), प्रांतीय महासचिव श्री नरेंद्र विक्रम सिंह जी, प्रांतीय उपाध्यक्ष/प्रभारी-औरैया श्री विवेकदत्त उपाध्यायजी, प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल जी के सानिध्य में एवं सभी सम्मानित साथियों के सहयोगी एवं अथक प्रयास से जनपद न्यायालय औरैया में जनपद के गठन से लेकर अब तक प्रथम बार दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ की स्थापना की गई है। जिसमे सर्वसम्मति से मुझे अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया, जिसके लिए मैं हृदय की गहराइयों से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, तथा नवगठित कार्यकारिणी से यह अपेक्षा करता हूँ की हम सब मिलकर अपने जनपद न्यायालय के समस्त कर्मचारीगण के हितार्थ कार्य करने के लिए सदैव तत्पर रहेगें।

इन्ही शब्दों के साथ धन्यवाद।

(मोहम्मद अतीक वारसी)
अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश
शाखा-औरैया

अंजुमन हिमायत चपरासियान संघ उत्तर प्रदेश की प्रदेश कार्यकारिणी का नवीन गठन एवं प्रथम आम सभा

दिनांक 8/8/2021 को जनपद न्यायालय मथुरा में **अंजुमन हिमायत चप्रसियान संघ उत्तर प्रदेश के प्रांतीय चुनाव संपन्न हुए।** जिसमे श्री बृज किशोर शर्मा (मथुरा) अध्यक्ष, श्री मुकेश कुमार (आगरा) प्रांतीय महामंत्री, सुश्री अनुप्रिया सक्सैना (आगरा) प्रांतीय कोषाध्यक्ष, श्री विनय कुमार शुक्ला (औरैया)- प्रांतीय उप महामंत्री, अरुण तोमर (आय व्यय निरीक्षक), श्री यशवर्धन जैन (उपाध्यक्ष) पद पर चुने गए। नवगठित कार्यकारणी को श्रीमानू जनपद न्यायाधीश महोदय, मथुरा द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए व शपथ दिलाई गई।

अन्जुमन हिमायत चपरासियान सघ उ०प्र० की प्रथम प्रान्तीय आमसभा आहूत की गयी । पहली आम सभा दिनांक 19-09-2021 को जनपद न्यायालय, आगरा में आयोजित की गयी। जिसमें लगभग 50 जिलों के पदाधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। उपरोक्त बैठक में कर्मचारियों से जुड़ी समस्याओं के निराकरण के सम्बन्ध में चर्चा की गयी व समस्याओं के निराकरण की रूपरेखा बनाई गई।

संघ के पदाधिकारियों व प्रदेश के जिला कार्यकारिणी के पदाधिकारियों व कर्मचारियों की उपस्थिति में प्रान्तीय कोषाध्यक्ष कु० अनुप्रिया सक्सैना के प्रस्तावित पर अन्जुमन हिमायत चपरासियान सघ उ०प्र० का नाम परिवर्तित करके नया नाम **"चतुर्थ श्रेणी न्यायिक कर्मचारी संघ उ०प्र०"** कर दी गयी। साथ ही प्रान्तीय महामंत्री मुकेश कुमार के द्वारा संघ के संविधान में संशोधन का प्रस्ताव रखा गया। जिस पर सभी पदाधिकारयों व जिला प्रतिनिधियों की द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गयी।

आम सभा में सर्व सम्मति से अंजुमन हिमायत चपरासियान संघ उत्तर प्रदेश का नाम परिवर्तित करके "चतुर्थ श्रेणी न्यायिक कर्मचारी संघ उ०प्र०" किया गया।

चतुर्थ श्रेणी न्यायिक कर्मचारी संघ उ0प्र0 की शाखा-लखीमपुर के नवनिर्वाचित पदाधिकारीगण का शपथ दिलवाते हुए दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ के प्रांतीय संरक्षक एवं प्रांतीय उपाध्यक्ष

एक नजर में ....

माननीय मुख्य न्यायमूर्ति महोदय मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद द्वारा दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ की वेबसाईट का ई–उद्घाटन

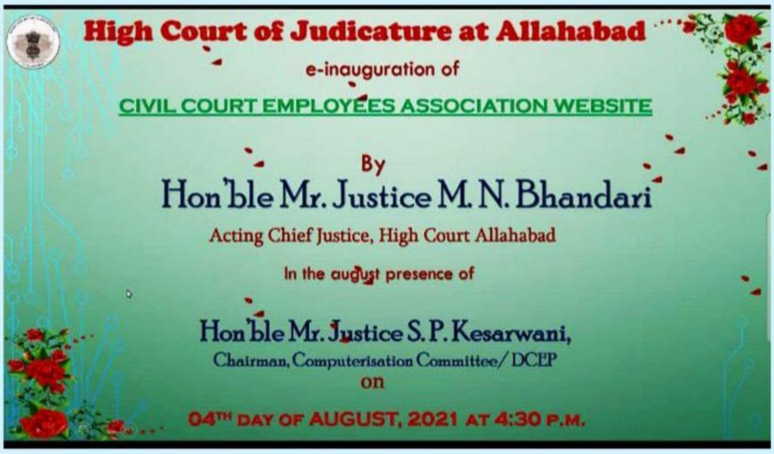

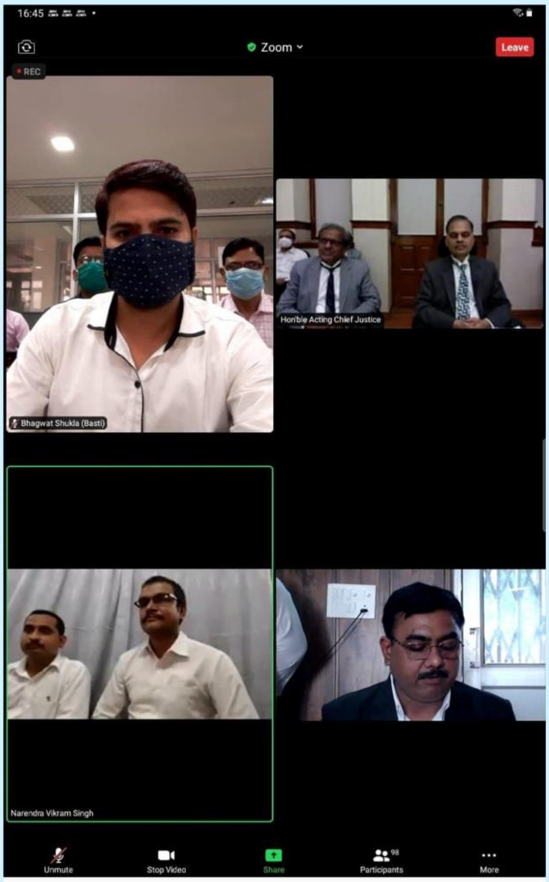

उद्घोष पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन करते हुए माननीय बृजेश पाठक जी, कैबिनेट मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार
साथ में संघ के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ० नृपेन्द्र सिंह एवं उद्घोष पत्रिका के सह-सम्पादक श्री भागवत शुक्ल

NMOPS के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय बंधु जी को पत्रिका भेंट करते हुए संघ के प्रांतीय अध्यक्ष
डॉ० नृपेन्द्र सिंह जी साथ में प्रांतीय संयुक्त सचिव एवं सह-सम्पादक उद्घोष ई-पत्रिका श्री भागवत शुक्ल

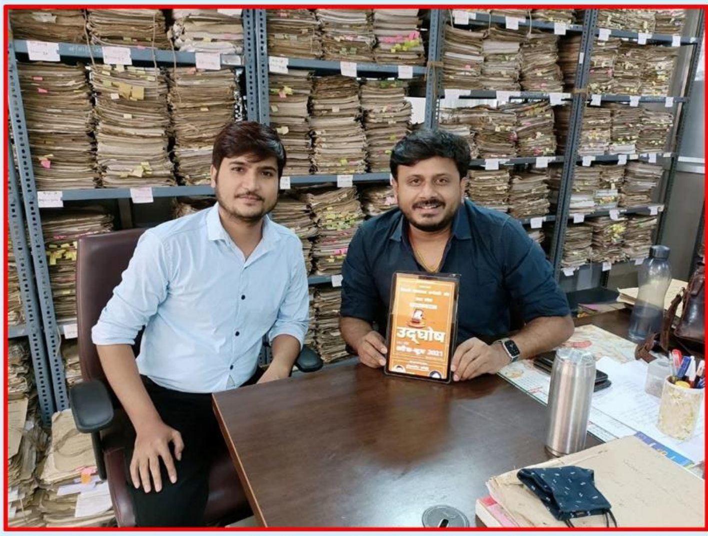

श्री सौरभ उपाध्याय जी (महासचिव) अधिकारी/कर्मचारी संघ
मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका, लखनऊ को
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

श्री विपिन कुमार यादव जी (संयुक्त निबन्धक)
मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका, लखनऊ को
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

श्री जितेन्द्र नाथ दीक्षित जी (संयुक्त निबन्धक)
मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका, लखनऊ को
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

श्री राजेश वर्मा जी (उप निबन्धक)
मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका, लखनऊ को
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

श्री आर०के० शुक्ल जी (सहायक निबन्धक)
मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका, लखनऊ को
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

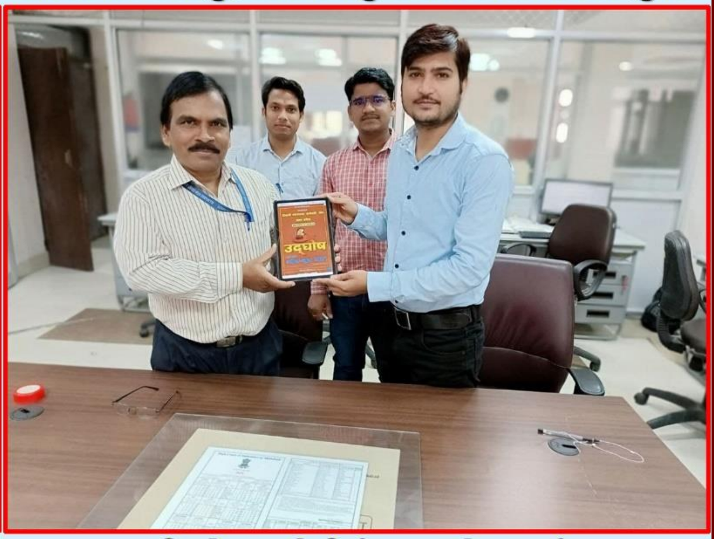

श्री उमेश वर्मा जी (सहायक निबन्धक)
मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका, लखनऊ को
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

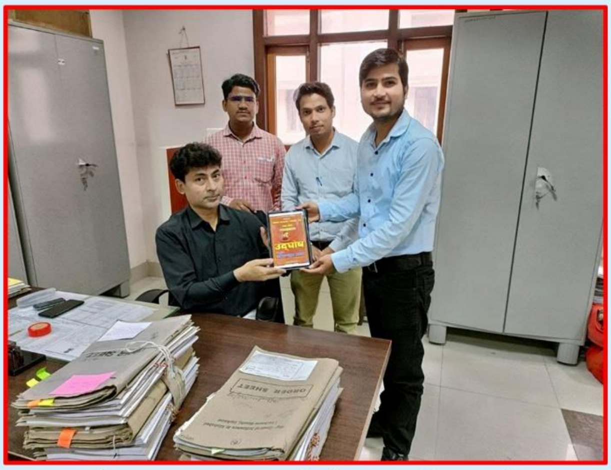

श्री आफताब आलम जी (सहायक निबन्धक)
मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका, लखनऊ को
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

श्री राजकुमार (सहायक निबन्धक), श्री धर्मेन्द्र चन्द्र श्रीवास्तव (सहायक निबन्धक),
श्री अजीत सिंह (अनुभाग अधिकारी) मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद को
पत्रिका भेंट करते हुए श्री सौरभ श्रीवास्तव एवं श्री दिग्विजय यादव, जनपद न्यायालय कासगंज

श्री अतुल शुक्ल जी (अनुभाग अधिकारी)
मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका, लखनऊ को
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

श्री पीयूष श्रीवास्तव जी (अनुभाग अधिकारी)
मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका, लखनऊ को
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

श्री प्रभात शुक्ल जी (अनुभाग अधिकारी), श्री जी०एस० बिष्ट (अनुभाग अधिकारी)
एवं श्री राजेश तिवारी जी (समीक्षा अधिकारी) मा० उच्च न्यायालय लखनऊ पीठिका
पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव श्री भागवत शुक्ल

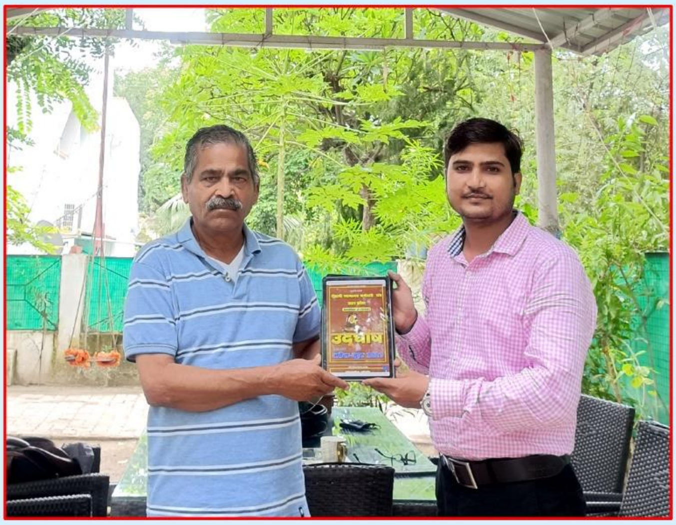

भूतपूर्व प्रांतीय अध्यक्ष डॉ० विजय कुमार जी को
ई-पत्रिका भेंट करते हुए प्रांतीय संयुक्त सचिव भागवत शुक्ल

सभी सम्मानित न्यायिक कर्मचारीगण को बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक पर्व विजयादशमी एवं दीपों के पावन पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

सत्यमेव जयते

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश

"संघे शक्ति कलियुगे"

'श्रमेव – जयते'

सशक्त संगठन समर्थ कर्मचारी

न्यायिक कर्मचारियों के हितार्थ संकल्पित